



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 6]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 12, 1997/माघ 22, 1918

No. 6]

NEW DELHI, WEDNESDAY, FEBRUARY 12, 1997/MAGHA 22, 1918

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गम और प्रबंध) विनियम, 1972

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1997

एफ. सं. विधि. 2897.— बोर्ड, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम, 1964 (1964 का 18) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और केन्द्रीय सरकार के पूर्व अनुमोदन से भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गम और प्रबंध) विनियम, 1972 का निम्नलिखित संशोधन करता है, अर्थात्:

- (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गम और प्रबंध) (संशोधन) विनियम, 1996 है।
(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

- भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गम और प्रबंध) विनियम, 1972 में, —

(क) विनियम 9 के स्थान पर निम्नलिखित विनियम रखा जाएगा, अर्थात्: खो जाने, चोरी आदि की सूचना का समाचारपत्र में प्रकाशन —

(1) वचनपत्र के रूप में किसी बंधपत्र के खो जाना, चोरी, विनाश, विकृति या विरूपण आवेदक की ओर से क्षेत्र के किसी अग्रणी समाचारपत्र में प्रकाशित किया जाएगा।

स्पष्टीकरण — विकास बैंक समय-समय पर विनिश्चय करेगा कि निर्गम कार्यालय की अधिकारिता के अधीन कौन से समाचारपत्र क्षेत्र के लिए "अग्रणी" समाचारपत्र समझे जाएंगे।

- उप विनियम (1) में निर्दिष्ट प्रकाशन निम्नलिखित रूप में या ऐसे निकट रूप में होगा जैसा परिस्थितियों में अनुज्ञात हो, अर्थात् :

रुपए का प्रतिशत बंधपत्र का भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र सं. जो मूलतः के नाम में था और पिछली बार स्वत्वधारी को पृष्ठांकित किया गया था जिसके द्वारा उसका किसी अन्य व्यक्ति को पृष्ठांकन नहीं किया गया है, के खो जाने, चोरी हो जाने, विनाश हो जाने, विकृत हो जाने, विरूपित हो जाने पर इसके द्वारा सूचना दी जाती है कि उक्त बंधपत्र और उस पर बयान का संदाय निर्गम कार्यालय में रोक दिया गया है और

स्वत्वधारी के पक्ष में अनुलिपि के निर्गम के लिए आवेदन किया जाने वाला है या किया गया है। जनता की उस पर वर्णित बंधपत्र का क्रय करने या अन्यथा लेनदेन करने के विरुद्ध चेतावनी दी जाती है।

(ख) विनियम 10 के स्थान पर निम्नलिखित विनियम रखा जाएगा, अर्थात्:

10. अनुलिपि बंधपत्र का निर्गम और क्षतिपूर्ति बंधपत्र लेना : (1) यदि विहित अधिकारी का वचनपत्र के रूप में बंधपत्र के खो जाने, चोरी, विनाश या विरुपण की बाबत समाधान हो जाता है तो वह आवेदक द्वारा एक या अधिक प्रतिभूओं सहित क्षतिपूर्ति बंधपत्र देने पर वचनपत्र के रूप में अनुलिपि बंधपत्र के निर्गम का आदेश कर सकेगा:

परन्तु यह कि यदि वचन-पत्र के रूप में अनुलिपि बंधपत्र के निर्गम के पूर्व किसी समय मूल बंधपत्र का पता चल जाता है या निर्गम कार्यालय को अन्य कारणों से प्रतीत होता है कि आदेश विखंडित किया जाना चाहिए तो मामला आगे विचार के लिए बोर्ड को निर्देशित किया जाएगा और इस दौरान आदेश पर सभी कार्रवाई निलंबित कर दी जाएगी। इस उप विनियम के अधीन पारित कोई आदेश उसमें निर्दिष्ट तीन मास की समाप्ति पर अंतिम हो जाएगा जब तक कि इस दौरान वह विखंडित या अन्यथा उपांतरित नहीं किया जाता है; और

परन्तु यह कि जहां खो गया, चोरी हो गया, विनष्ट हो गया, विकृत हो गया या विरुपित हो गया वचनपत्र के रूप में बंधपत्र पचास हजार रुपये से अनधिक अंकित मूल्य का है वहां वचनपत्र के रूप में अनुलिपि बंधपत्र आवेदक द्वारा ऐसे प्रतिभू के बिना क्षतिपूर्ति बंधपत्र देने पर निर्गमित किया जा सकेगा:

परन्तु यह और कि जहां किसी भी अंकित मूल्य के विकृत या विरुपित वचनपत्र के रूप में बंधपत्र की बाबत ऐसा आवेदन किया जाता है वहां वचनपत्र के रूप में अनुलिपि बंधपत्र प्रतिभू सहित या रहित किसी ऐसी क्षतिपूर्ति के बिना निर्गमित किया जा सकेगा यदि वचनपत्र के रूप में बंधपत्र मूलतः निर्गमित बंधपत्र के रूप में पहचाने जाने योग्य है;

(2) विकास बैंक इस विनियम के अधीन ऐसा अनुलिपि बंधपत्र सद्भावपूर्वक निर्गमित करने के लिए कोई दायित्व उपगत नहीं करेगा।

(3) उप-विनियम (1) के अधीन निर्गमित अनुलिपि बंधपत्र इन विनियमों के सभी प्रयोजनों के लिए मूल बंधपत्र के समतुल्य माना जाएगा सिवाय इसके कि वह उस निर्गम कार्यालय के, जिसमें ऐसा बंधपत्र पूर्व सत्यापन के बिना रजिस्ट्रीकृत किया गया है, भिन्न किसी निर्गम कार्यालय में भुनाए जाने योग्य नहीं होगा।

(ग) विनियम 19 के खंड (ग) के पश्चात् निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :

(ख) विनियम 10 के अधीन निर्गमित वचनपत्र के रूप में अनुलिपि बंधपत्र की दशा में उसके निर्गम के पश्चात् तुरन्त

(घ) विनियम 18 के स्थान पर निम्नलिखित विनियम रखा जाएगा, अर्थात् :

12. (1) अनुलिपि बंधपत्रों की सूची का प्रकाशन : विकास बैंक, विकास बैंक द्वारा निर्गमित अनुलिपि बंधपत्रों की सूची दो अग्रणी समाचार पत्रों में और भारत के राजपत्र में जनवरी और जुलाई के मासों में अर्धवार्षिक रूप से प्रकाशित करेगा।

(2) सूची में विकास बैंक द्वारा अनुलिपि बंधपत्रों से संबंधित निम्नलिखित विशिष्टियां होंगी :

(क) निर्गम का नाम,

(ख) बंधपत्र का संख्यांक, उसका मूल्य,

(ग) उस व्यक्ति का नाम जिसे वह निर्गमित किया गया था,

(घ) वह तारीख जिससे उस पर ब्याज लगेगा,

(ङ) अनुलिपि के लिए आवेदक का नाम,

(च) ब्याज के संदाय या अनुलिपि के निर्गम के लिए विहित अधिकारी द्वारा पारित आदेश का संख्यांक और तारीख।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गमन और प्रबंधन) विनियम, 1972

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक का निदेशक बोर्ड, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम, 1964 (1964 का 18) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और लागू होना :—

- (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंधपत्रों का निर्गमन और प्रबंधन) विनियम, 1972 है।
- (2) वे भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, 1964 की धारा 11 की उपधारा (1) के खंड (क) के अधीन विकास बैंक द्वारा निर्गमित और विक्रीत बंधपत्रों को लागू होंगे।

2. परिभाषाएं :—

इन विनियमों में जब तक कोई बात विषय या संदर्भ के विरुद्ध न हो,—

- (क) “अधिनियम” से भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम, 1964 अभिप्रेत है;
- (ख) “बंधपत्रों” से अधिनियम की धारा 11 की उपधारा (1) के खंड (क) के अधीन विकास बैंक द्वारा निर्गमित और विक्रीत बंधपत्र अभिप्रेत है;
- (ग) “विकास बैंक” से अधिनियम के अधीन स्थापित भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अभिप्रेत है;
- (घ) “विरूपित बंधपत्र” से ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत है जो अपठनीय और महत्वपूर्ण भागों में अनुदवाचनीय कर दिया गया है और बंधपत्र के महत्वपूर्ण भाग वे हैं जहां :—
 - (i) बंधपत्र का संख्यांक, निर्गम जिससे वह संबंधित है और उसका अंकित मूल्य या ब्याज का संदाय लेखबद्ध किए गए हैं;
 - (ii) पृष्ठांकन या पाने वाले का नाम लिखा हुआ है;
 - (iii) नवीकरण रसीद या अंतरण ज्ञापन का प्रदाय किया जाता है।
- (ङ) “प्ररूप” नियमों की अनुसूची में दिया गया प्ररूप अभिप्रेत है;
- (च) “खो गया बंधपत्र” से वह बंधपत्र अभिप्रेत है जो वास्तव में खो गया है और ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत नहीं होगा जो दावेदार के विरुद्ध किसी व्यक्ति के कब्जे में है;
- (छ) “विकृत बंधपत्र” से ऐसा बंधपत्र अभिप्रेत है, जो उसके महत्वपूर्ण भागों में नष्ट कर दिया गया है, फाड़ दिया गया है या क्षतिग्रस्त कर दिया गया है;
- (ज) “निर्गम कार्यालय” से विकास बैंक का वह कार्यालय अभिप्रेत है जिसकी बहियों में बंधपत्र रजिस्ट्रीकृत है या रजिस्ट्रीकृत किया जा सकता है;
- (झ) “विहित अधिकारी” से विकास बैंक का महा प्रबंधक या ऐसे अधिकारी अभिप्रेत हैं जो विनियम 10, 11, 12, 13, 15, 16 और 17 के प्रयोजनों के लिए विकास बैंक के निदेशक बोर्ड द्वारा प्राधिकृत किए जाएं;
- (ञ) “स्टाक प्रमाणपत्र” से विनियम 3 के अधीन निर्गमित स्टाक प्रमाणपत्र अभिप्रेत है।

3. बंधपत्र का प्ररूप और उसके अंतरण का ढंग आदि :—

- (1) बंधपत्र—
 - (क) किसी निश्चित व्यक्ति को या उसके आदेश पर संदेय वचनपत्र के रूप में निर्गमित किया जा सकेगा;
 - (ख) विकास बैंक की बहियों में रजिस्ट्रीकृत स्टाक के रूप में निर्गमित किया जा सकेगा जिसके लिए स्टाक प्रमाणपत्र निर्गमित किए जाते हैं।
- (2) (क) वचनपत्र के रूप में निर्गमित बंधपत्र आदेश पर संदेय वचनपत्र की भांति पृष्ठांकन और परिदान द्वारा अंतरणीय होगा।
 - (ख) वचनपत्र के रूप में निर्गमित बंधपत्र पर परक्रामण के प्रयोजन के लिए कोई लेख विधिमान्य नहीं होगा यदि ऐसे लेख से बंधपत्र पर अभिहित रकम के केवल किसी भाग का अंतरण करना तात्पर्यित है।
- (3) स्टाक प्रमाणपत्र के रूप में निर्गमित और विकास बैंक की बहियों में रजिस्ट्रीकृत बंधपत्र प्ररूप V में अंतरण लिखत के निष्पादन द्वारा पूर्णतया या भागतः अंतरणीय होगा। ऐसे मामले में अंतरक स्टाक के, जिससे अंतरण संबंधित है, रूप में निर्गमित बंधपत्रों का धारक समझा जाएगा जब तक कि अंतरिती का नाम विकास बैंक द्वारा रजिस्ट्रीकृत नहीं किया जाता है।
- (3क) (क) इसमें अंतर्निष्ठ किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी विकास बैंक, बंधपत्रों के हकदार व्यक्ति के अनुरोध पर, बंधपत्रों के हकदार व्यक्ति के नाम में विकास बैंक द्वारा बनाए रखे जाने वाले खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र निर्गमित कर सकेगा।

- (ख) विकास बैंक की लेखा बहियों में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र या तो आरंभ में बंधपत्रों के लिए प्रतिश्रुति के समय या बाद में या तो वचनपत्र या स्टॉक के रूप में निर्गमित बंधपत्रों के संपरिवर्तन द्वारा इस प्रकार निर्गमित किए जा सकेंगे।
- (ग) यदि कोई बंधपत्र पहले ही वचनपत्र के रूप में निर्गमित किया गया है तो विकास बैंक के पास किसी खाते में प्रविष्टि के रूप में उसे धारण करने का इच्छुक व्यक्ति प्ररूप XI में अध्यक्ष को भेजेगा और विकास बैंक की बहियों में किसी खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र धारण करने के लिए विकास बैंक के पक्ष में सम्यक् रूप से पृष्ठांकित बंधपत्र अभ्यर्पित करेगा।
- (घ) यदि बंधपत्र स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में निर्गमित किया गया है तो धारक बंधपत्र का विकास बैंक के पक्ष में इस अनुरोध के साथ अंतरण करेगा कि बंधपत्र, धारक के नाम में विकास बैंक द्वारा बनाए रखे जाने वाले खाते में प्रविष्टि के रूप में रखा जाए।
- (ङ) विकास बैंक द्वारा बनाए रखे गए किसी खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र धारण करने वाला व्यक्ति प्ररूप XII में आवेदन करके बंधपत्रों को वचनपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में अंतरित या संपरिवर्तित करा सकेगा।
- (च) विकास बैंक की बहियों में खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र निर्गमित करने या विकास बैंक की बहियों में प्रविष्टि के रूप में या तो वचनपत्र या स्टॉक के रूप में या विपर्ययेन पहले ही निर्गमित बंधपत्रों को संपरिवर्तित करने के लिए कोई फीस प्रभाव्य नहीं है।
- (छ) विकास बैंक की बहियों में प्रविष्टि के रूप में निर्गमित या धारित बंधपत्र प्ररूप XIII में अंतरण लिखित के निष्पादन द्वारा अंतरणीय होंगे। ऐसे मामलों में अंतरक बंधपत्रों का, जिनसे अंतरण संबंधित है उस समय तक धारक समझा जाएगा जब अंतरितों का नाम विकास बैंक की बहियों में प्रविष्टि किया जाता है।
- (4) (क) बंधपत्र विकास बैंक के अध्यक्ष और, या प्रबंध निदेशक के हस्ताक्षर से जो मुद्रित, उत्कीर्णित, लीथोमुद्रित या ऐसी अन्य प्रक्रिया द्वारा छापित हो जैसा विकास बैंक निर्दिष्ट करे, निर्गमित किया जाएगा।
- (ख) इस प्रकार मुद्रित, उत्कीर्णित, लीथोमुद्रित या अन्यथा छापित हस्ताक्षर इस प्रकार विधिमान्य होगा मानो वह स्वयं हस्ताक्षरकर्ता के अपने हस्ताक्षर में अंतर्लिखित किया गया हो।
- (5) वचनपत्र के रूप में बंधपत्र पर कोई पृष्ठांकन या किसी बंधपत्र के मामले में स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में अंतरण की कोई लिखित तब तक विधिमान्य नहीं होगी जब तक वह बंधपत्र के रूप में किसी बंधपत्र के मामले में धारक या सम्यक् रूप से गठित उसके अटर्नी या प्रतिनिधि द्वारा स्वयं बंधपत्र की पिछली ओर और किसी स्टॉक प्रमाणपत्र के मामले में अंतरण लिखित पर अंतर्लिखित हस्ताक्षर द्वारा नहीं की जाती है।

4. न्यास मान्यताप्राप्त नहीं : —

- (1) विकास बैंक, किसी बंधपत्र की बाबत, धारक में उसके पूर्ण अधिकार से भिन्न किसी न्यास को, तब भी जब उसे उसकी सूचना है, या किसी अधिकार को मान्यता देने के लिए आबद्ध या विवश नहीं किया जाएगा।
- (2) उप-विनियम (1) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना विकास बैंक अनुग्रहस्वरूप और विकास बैंक के किसी दायित्व के बिना स्टॉक पर ब्याज या उसके परिपक्वता मूल्य के या उसके अंतरण या उससे संबंधित विषयों के लिए स्टॉक के रूप में निर्गमित किसी बंधपत्र के धारक द्वारा ऐसे निदेश अपनी बहियों में लेखबद्ध कर सकेगा जो विकास बैंक ठीक समझे।

5. न्यासियों और पद धारकों द्वारा स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में निर्गमित बंधपत्र धारण करने के लिए उपबंध :

- (1) स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में कोई बंधपत्र किसी पद धारक द्वारा—
- (क) विकास बैंक की बहियों में और स्टॉक प्रमाणपत्र में न्यासी के रूप में वर्णित उसके व्यक्तिगत नाम में, चाहे उसके आवेदन में विनिर्दिष्ट न्यास के न्यासी के रूप में या किसी ऐसे विशेषक के बिना किसी न्यासी के रूप में धारण किया जा सकेगा;
- (ख) उसके पदनाम में धारण किया जा सकेगा।
- (2) विकास बैंक द्वारा अपेक्षित प्ररूप में विकास बैंक से लिखित रूप में किए गए आवेदन पर वह व्यक्ति जिसके नाम में बंधपत्र है और बंधपत्र के अभ्यर्पण पर विकास बैंक—
- (क) उसे किसी विनिर्दिष्ट न्यास के न्यासी के रूप में वर्णित करते हुए अपनी बहियों में प्रविष्टि कर सकेगा और, यथास्थिति, न्यास का विनिर्देश करके या उसके बिना न्यासी के रूप में वर्णित उसके नाम में स्टॉक प्रमाणपत्र निर्गमित कर सकेगा ; या
- (ख) उसके पदनाम में उसे स्टॉक प्रमाणपत्र निर्गमित कर सकेगा और आवेदक के अनुरोध के अनुसार उसके पदनाम में स्टॉक के धारक के रूप में वर्णित करते हुए अपनी बहियों में प्रविष्टि कर सकेगा, परंतु तब जब—
- (i) अनुरोध इसके उप-विनियम (1) के उपबंधों के अनुरूप है;
- (ii) उप-विनियम (7) के निबंधों के अनुसार विकास बैंक द्वारा अपेक्षित आवश्यक साक्ष्य दे दिया गया है ; और

(iii) बंधपत्र, यदि यह वचनपत्र के रूप में हैं तो विकास बैंक के पक्ष में पृष्ठांकित कर दिया गया है और यदि स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में हैं तो रजिस्ट्रीकृत धारक द्वारा प्रारूप X में रसीद दे दी गई है।

- (3) उप-विनियम (1) के अधीन स्टॉक प्रमाणपत्र पद धारक द्वारा या तो अकेले या किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों या पद धारण करने वाले किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप में धारण किया जा सकेगा।
- (4) जब स्टॉक किसी व्यक्ति द्वारा उसके पदनाम में धारण किया जाता है तो संबंधित स्टॉक प्रमाणपत्र संबंधी कोई दस्तावेज तत्समय पद धारण करने वाले व्यक्ति द्वारा उस नाम से निष्पादित की जा सकेंगी जिसमें स्टॉक प्रमाणपत्र धारण किया जाता है मानो उसका व्यक्तिगत नाम इस प्रकार कथित किया गया है।
- (5) जहां विकास बैंक की बहियों में न्यासी के रूप में या किसी पद के धारक के रूप में किसी स्टॉक प्रमाणपत्र धारक द्वारा निष्पादित किया गया तात्पर्यित कोई अंतरण विलेख, मुख्तारनामा या अन्य दस्तावेज विकास बैंक के समक्ष पेश की जाती है वहां विकास बैंक के लिए यह जांच करना अपेक्षित नहीं होगा कि क्या स्टॉक धारक किसी न्यास या दस्तावेज या नियमों के निबंधनों के अधीन कोई ऐसी शक्ति देने या ऐसा विलेख या अन्य दस्तावेज निष्पादित करने के लिए हकदार है और अंतरण विलेख, मुख्तारनामा या दस्तावेज पर उसी रीति में कार्य कर सकेगा मानो निष्पादी स्टॉक प्रमाणपत्र धारक है और चाहे स्टॉक प्रमाणपत्र धारक अंतरण विलेख, मुख्तारनामा या दस्तावेज में न्यासी के रूप में या किसी पद के धारक के रूप में वर्णित है या नहीं है और चाहे उसका न्यासी की या पद के धारक की हैसियत में अंतरण विलेख, मुख्तारनामा या दस्तावेज निष्पादित करना तात्पर्यित है या नहीं है।
- (6) इन विनियमों की कोई बात किसी न्यास या किसी दस्तावेज या नियमों के अधीन किन्हीं न्यासियों, धारकों और हिताधिकारियों के बीच न्यासियों या पद धारकों को न्यास को गठित करने वाली लिखत या उस संगम को, जिसका स्टॉक प्रमाणपत्र धारक पद धारक है, शासित करने वाले नियमों के निबंधनों को न्यास को लागू होने वाले विधि-नियमों के अनुसार से अन्यथा कार्य करने के लिए प्राधिकृत करने वाली नहीं समझी जाएगी और न ही किसी स्टॉक प्रमाणपत्र या किसी स्टॉक प्रमाणपत्र धारक के संबंध में विकास बैंक द्वारा बनाए रखे गए किसी रजिस्टर में किसी प्रविष्टि के या स्टॉक प्रमाणपत्र से संबंधित किसी दस्तावेज में किसी बात के कारण ही न्यास की सूचना या किसी स्टॉक प्रमाणपत्र धारक की वैश्वासिक हैसियत का या किसी स्टॉक प्रमाणपत्र धारण करने से संलग्न किसी वैश्वासिक-बाध्यता की सूचना का प्रभाव पड़ेगा।
- (7) किसी पद के धारक के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा इस विनियम के अनुसरण में किए गए किसी आवेदन पर या निष्पादित की गई तात्पर्यित किसी दस्तावेज पर कार्य करने से पूर्व विकास बैंक यह साक्ष्य पेश करने की अपेक्षा कर सकेगा कि ऐसा व्यक्ति उस पद का तत्समय धारक है।

5क. न्यास/न्यासी (न्यासियों) द्वारा वचनपत्रों के रूप में निर्गमित बंधपत्रों को धारण करने के लिए उपबंध :

- (1) विनियम 4 के उप-विनियम (1) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना विकास बैंक आवेदक के अनुरोध पर और विकास के किसी दायित्व के बिना, यथास्थिति, किसी विनिर्दिष्ट न्यास या उस न्यास के न्यासी (न्यासियों) के नाम में, उसे न्यासी के रूप में वर्णित करते हुए, चाहे उसके आवेदन में विनिर्दिष्ट न्यास के न्यासी के रूप में या ऐसे विनिर्देशों के बिना न्यासी के रूप में उसके व्यक्तिगत नाम में वचनपत्र के रूप में बंधपत्र निर्गमित कर सकेगा।
- (2) जहां वचनपत्र के रूप में बंधपत्र, धारक के व्यक्तिगत नाम में है वहां विकास बैंक, विकास बैंक द्वारा अपेक्षित प्रारूप में उसके द्वारा किए गए आवेदन पर इसके उप-विनियम (1) में दी गई रीति में वचनपत्र के रूप में नवीकृत बंधपत्र निर्गमित कर सकेगा परंतु तब जब—
 - (1) इसके उप-विनियम (6) के निबंधनों के अनुसार विकास बैंक द्वारा अपेक्षित साक्ष्य दे दिया गया है; और
 - (2) बंधपत्र विकास बैंक के पक्ष में पृष्ठांकित कर दिया गया है।
- (3) उप-विनियम (1) के अधीन बंधपत्र किसी न्यास के न्यासी द्वारा या तो अकेले या किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप में उस न्यास के न्यासियों के रूप में धारण किया जा सकेगा।
- (4) जहां वचनपत्र के रूप में बंधपत्र, बंधपत्र धारक द्वारा न्यासी के रूप में पृष्ठांकित किया गया तात्पर्यित है या जहां बंधपत्र धारक द्वारा निष्पादित किया गया तात्पर्यित कोई मुख्तारनामा या अन्य दस्तावेज विकास बैंक के समक्ष पेश की जाती है वहां विकास बैंक के लिए यह जांच करना अपेक्षित नहीं होगा कि बंधपत्र धारक किसी न्यास या दस्तावेज या नियमों के निबंधनों के अधीन ऐसा पृष्ठांकन करने या ऐसा मुख्तारनामा या अन्य दस्तावेज निष्पादित करने के लिए हकदार है और पृष्ठांकन, मुख्तारनामा या दस्तावेज पर उसी रीति में कार्य कर सकेगा मानो ऐसा पृष्ठांकक बंधपत्र धारक है और चाहे बंधपत्र धारक पृष्ठांकन, मुख्तारनामा या दस्तावेज में न्यासी के रूप के वर्णित है और चाहे उसका न्यासी की हैसियत में ऐसा पृष्ठांकन करना या मुख्तारनामा या दस्तावेज निष्पादित करना तात्पर्यित है या नहीं है।

- (5) इन विनियमों की कोई बात किसी न्यास या किसी दस्तावेज या नियमों के अधीन न्यासियों और हिताधिकारियों के बीच न्यासियों को न्यास को लागू होने वाले विधि-नियमों के या न्यास को गठित करने वाली लिखत के निबंधनों के अनुसार से अन्यथा कार्य करने के लिए प्राधिकृत करने वाली नहीं समझी जाएगी।
- (6) किसी न्यास के न्यासी के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा इस विनियम के अनुसरण में किए गए किसी आवेदन पर कार्य करने से पूर्व विकास बैंक यह साक्ष्य पेश करने की अपेक्षा कर सकेगा कि ऐसा व्यक्ति उस न्यास का तत्समय न्यासी है।

6. धारक होने के लिए निरर्हित व्यक्ति :

कोई अवयस्क और कोई व्यक्ति जो किसी सक्षम न्यायालय द्वारा विकृतचित पाया गया है बंधपत्रों का धारक होने का हकदार नहीं होगा।

7. ब्याज का संदाय :—

- (1) वचनपत्र के रूप में बंधपत्र पर ब्याज निर्गम कार्यालय या बंधपत्र प्राप्तेक्टस में विनिर्दिष्ट विकास बैंक के किसी अन्य कार्यालय द्वारा बंधपत्र के धारक द्वारा ऐसी औपचारिकताओं के जिनकी विकास बैंक अपेक्षा करे, पालन करने के अधीन रहते हुए और बंधपत्र के प्रस्तुत किए जाने पर संदत किया जाएगा।
- (2) स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में बंधपत्र पर ब्याज विकास बैंक द्वारा जारी किए गए अधिपत्रों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के विभिन्न कार्यालयों में संदेय होगा। ब्याज के संदाय के समय स्टॉक प्रमाणपत्र पेश करना अपेक्षित नहीं होगा किन्तु पाने वाला प्राप्ति अधिपत्र की पिछली ओर उसे अभिस्वीकार करेगा।
- (3) विकास बैंक की बहियों में प्रविष्टि के रूप में धारित बंधपत्र पर ब्याज विकास बैंक द्वारा पाने वाले के खाते में क्रास किए गए अधिपत्र जारी करके या ऐसी अन्य रीति से किया जाएगा जिसके लिए विकास बैंक सहमत हो।

8. वहाँ प्रक्रिया जहाँ वचनपत्र के रूप में बंधपत्र खो जाता है, आदि

- (1) ऐसे बंधपत्र के स्थान पर जिसका पूर्णतया या भागतः खो जाना, चोरी हो जाना, नष्ट हो जाना, विकृत हो जाना या विरूपित हो जाना अभिकथित है बंधपत्र की दूसरी प्रति निर्गमित करने के लिए प्रत्येक आवेदन निर्गम कार्यालय को संबोधित किया जाएगा और उसमें निम्नलिखित विशिष्टियां होंगी, अर्थात् :—
 - (क) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र ----- प्रतिशत के ----- रुपये के लिए बंधपत्र संख्यांक -----.
 - (ख) पिछला आधा वर्ष जिसके लिए ब्याज का संदाय किया जा चुका है;
 - (ग) वह व्यक्ति जिसे ऐसा ब्याज संदत किया गया था;
 - (घ) वह व्यक्ति जिसके नाम में बंधपत्र निर्गमित किया गया था (यदि ज्ञात हो);
 - (ङ) खो जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत हो जाने या विरूपित हो जाने की परिस्थितियां; और
 - (च) क्या खो जाने या चोरी हो जाने की रिपोर्ट पुलिस को की गई थी।

(2) ऐसे आवेदन के साथ निम्नलिखित होंगे:—

- (क) जहाँ बंधपत्र रजिस्ट्री डाक द्वारा पारेषण के अनुक्रम में खो गया था वहाँ बंधपत्र को अंतर्विष्ट करने वाले पत्र के लिए डाक घर रजिस्ट्रीकरण रसीद;
- (ख) पुलिस रिपोर्ट की प्रति यदि खो जाने या चोरी हो जाने की रिपोर्ट पुलिस को की गई थी;
- (ग) यदि आवेदक रजिस्ट्रीकृत धारक नहीं है तो साक्षियत करने वाला किसी मजिस्ट्रेट के समक्ष शपथपत्र कि आवेदक बंधपत्र का अंतिम विधित धारक था और रजिस्ट्रीकृत धारक के हक का पता लगाने के लिए आवश्यक सभी दस्तावेजी साक्ष्य; और
- (घ) खो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विरूपित हो गए बंधपत्र का कोई भाग या पुर्जे जो बचे हों।

9. राजपत्र में अधिसूचना :—

किसी बंधपत्र या वचनपत्र के रूप में बंधपत्र या उसके भाग के खो जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत या विरूपित हो जाने की आवेदक द्वारा अधिसूचना भारत के राजपत्र और उस स्थान के, जहाँ खो जाना, चोरी, नाश, विकृति या विरूपण हुआ है, स्थानीय राजपत्र के तीन क्रमवर्ती अंकों में तुरन्त प्रकाशित कराई जाएगी। ऐसी अधिसूचना निम्नलिखित रूप में या यथासाध्य निकटतम ऐसे रूप में होगी जो परिस्थितियों में अनुज्ञात हो:—

“-----रूप के-----प्रतिशत बंधपत्र-----के भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र सं-----के, जो मूलतः-----के नाम में हैं और पिछली बार-----स्वत्वधारी को पृष्ठांकित किया गया था जिसके द्वारा उसका किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में पृष्ठांकन नहीं किया गया है *खो जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत हो जाने, विरूपित हो जाने पर इसके द्वारा सूचना दी जाती है कि उपर्युक्त बंधपत्र और उस पर ब्याज का संदाय निर्गम कार्यालय में रोक दिया गया है और कि स्वत्वधारी के पक्ष में दूसरी प्रति निर्गमित किए जाने के लिए आवेदन किया जाने वाला है या कर दिया गया है। जनता को उपरिखणित बंधपत्र का क्रय करने या अन्यथा लेनदेन करने के विरुद्ध चेतावनी दी जाती है।

अधिसूचना देने वाले व्यक्ति का नाम-----

निवास स्थान-----

*जो लागू न हो उसे हटा दें।

10. बंधपत्र की दूसरी प्रति का निर्गमन और क्षतिपूर्ति लेना

- (1) विनियम 9 में विहित अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन के पश्चात् विहित अधिकारी, यदि उसका बंधपत्र के खो जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत हो जाने या विरूपित हो जाने और आवेदक के दावे के न्यायासंगत होने के बारे में समाधान हो जाता है तो विनियम 12 के अधीन प्रकाशित की जाने वाली सूची में बंधपत्र की विशिष्टियां सम्मिलित कराएगा और निर्गम कार्यालय को—
- (क) यदि बंधपत्र का केवल भाग ही खो गया, चोरी हो गया, नष्ट हो गया, विकृत हो गया या उसका केवल भाग ही पहचान के लिए पेश किया गया है तो ऐसी क्षतिपूर्ति के, जैसी इसमें आगे वर्णित है, निष्पादन पर आवेदक को ब्याज का संदाय करने और उस बंधपत्र के स्थान पर जिसका भाग इस प्रकार खो गया, चोरी हो गया, नष्ट हो गया, विकृत या विरूपित हो गया है विनियम 12 के अधीन सूची के प्रकाशन के पश्चात् या तो तुरन्त या ऐसी अवधि की समाप्ति पर जो विहित अधिकारी उक्त सूची के प्रकाशन की तारीख से आवश्यक समझे, बंधपत्र की दूसरी प्रति निर्गमित करने के लिए आदेश देगा।
- (ख) यदि उसकी पहचान के लिए इस प्रकार खो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत हो गए या विरूपित हो गए बंधपत्र का कोई भाग पेश नहीं किया गया है तो—
- (1) उक्त सूची के प्रकाशन के पश्चात् दो वर्ष के पश्चात् और इसमें आगे विहित रीति में क्षतिपूर्ति के निष्पादन के पश्चात् इस प्रकार खो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विरूपित हो गए बंधपत्र की बाबत इसमें आगे यथा उपबंधित अगले चार वर्ष की अवधि की समाप्ति तक आवेदक को ब्याज के संदाय का आदेश देगा; और
- (II) उक्त सूची के प्रकाशन की तारीख के पश्चात् चार वर्ष की समाप्ति पर इस प्रकार खो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विरूपित हो गए बंधपत्र के स्थान पर बंधपत्र की दूसरी प्रति आवेदक को निर्गमित करने के लिए आदेश देगा परन्तु तब जब, —
- (i) यदि वह तारीख जिस को बंधपत्र का प्रदाय होना है उस तारीख से पूर्वतर पड़ती है जिसको चार वर्ष की उक्त अवधि समाप्त होती है तो विहित अधिकारी बंधपत्र पर शोध्य मूल रकम का पूर्वकथित तारीख से छह मास के भीतर डाकघर बचत बैंक में निवेश करेगा और ब्याज सहित, जो ऐसे बैंक में उस पर प्रोद्भूत हुआ हो उस रकम का आवेदक को उस समय प्रतिसंदाय करेगा जब बंधपत्र की दूसरी प्रति अन्यथा निर्गमित की गई होती, और
- (ii) यदि बंधपत्र की दूसरी प्रति के निर्गमन के पूर्व किसी समय मूल बंधपत्र मिल जाता है या निर्गम कार्यालय को अन्य कारणों से प्रतीत होता है कि आदेश विखंडित किया जाना चाहिए तो मामला आगे विचार के लिए विहित अधिकारी को निर्दिष्ट किया जाएगा और इस दौरान आदेश पर सभी कार्रवाई निलंबित कर दी जाएगी। इस उप-विनियम के अधीन पारित किया गया आदेश उसमें निर्दिष्ट चार वर्ष की अवधि की समाप्ति पर अंतिम हो जाएगा जब तक कि इस दौरान वह विखंडित या अन्यथा उपांतरित नहीं कर दिया जाता है।
- (2) विहित अधिकारी बंधपत्र की दूसरी प्रति के निर्गमन के पूर्व किसी समय, यदि उसके पास पर्याप्त कारण है तो उसके द्वारा इस विनियम के अधीन किए गए आदेश को परिवर्तित या रद्द कर सकेगा और यह निदेश भी दे सकेगा कि बंधपत्र की दूसरी प्रति के निर्गमन के पूर्व का अंतराल चार वर्ष से अनधिक की ऐसी अवधि के लिए, जो वह ठीक समझे, बढ़ा दिया जाएगा।
- (3) क्षतिपूर्तियां —
- (क) (I) जब उप-विनियम (1) (क) के अधीन निष्पादित की जाए अंतर्वर्तित ब्याज की रकम के दोगुने के बराबर अर्थात् बंधपत्र पर प्रोद्भूत शोध्य सभी पिछले ब्याज की रकम के बराबर जमा उस पर उस अवधि के दौरान जो बंधपत्र की दूसरी प्रति का निर्गमन किए जा सकने के पूर्व बीतनी होगी उस पर शोध्य प्रोद्भूत होने वाले सभी ब्याज के दोगुने के बराबर होंगे, और

(II) सभी अन्य मामलों में बंधपत्र के अंकित मूल्य के दोगुने के जमा खंड (I) के अनुसार संगणित ब्याज की रकम के दोगुने के बराबर होंगी।

(ख) विहित अधिकारी निर्दिष्ट कर सकेगा कि ऐसी क्षतिपूर्ति अकेले आवेदक द्वारा या उसके द्वारा अनुमोदित एक या दो प्रतिभुओं द्वारा, जो वह ठीक समझे, निष्पादित की जाएगी।

11. प्रक्रिया जब स्टॉक प्रमाणपत्र के रूप में बंधपत्र खो जाता है, आदि

(1) ऐसे स्टॉक प्रमाणपत्र के, जिसका पूर्णतया या भागतः खो जाना, चोरी हो जाना, नष्ट हो जाना, विकृत या विरूपित हो जाना अभिकथित है, स्थान पर स्टॉक प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति के निर्गमन के लिए प्रत्येक आवेदन निर्गम कार्यालय को संबोधित किया जाएगा और उसके साथ निम्नलिखित होंगे —

(क) स्टॉक प्रमाणपत्र को अंतर्विष्ट करने वाले पत्र की डाक घर रजिस्ट्रीकरण रसीद यदि वह रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा पारेषण में खो गया था;

(ख) पुलिस रिपोर्ट की प्रति यदि खो जाने या चोरी हो जाने की रिपोर्ट पुलिस को की गई थी;

(ग) किसी मजिस्ट्रेट के समक्ष यह साक्षित करने वाला शपथपत्र कि आवेदक प्रमाणपत्र का विधिक धारक है और कि स्टॉक न तो उसके कब्जे में है और न ही वह उसके द्वारा अंतरित, गिरवी किया गया है या उसका लेनदेन किया गया है; और

(घ) खो गए, चोरी हो गए, नष्ट हो गए, विकृत या विरूपित हो गए स्टॉक प्रमाणपत्र के कोई भाग या पुर्जे जो बचे हों।

(2) खो जाने की परिस्थितियां आवेदन में कथित की जाएंगी। (ब) विहित अधिकारी, यदि उसका स्टॉक प्रमाणपत्र के खो जाने, चोरी हो जाने, नष्ट हो जाने, विकृत या विरूपित हो जाने के बारे में समाधान हो जाता है तो मूल प्रमाणपत्र के बदले में स्टॉक प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति के निर्गमन के लिए निदेश देगा।

12. सूची का प्रकाशन

(1) विनियम 10 में निर्दिष्ट सूची भारत के राजपत्र में जनवरी और जुलाई के मासों में अर्धवार्षिक रूप में या उसके पश्चात् यथाशीघ्र, जो भी सुविधापूर्ण हो, प्रकाशित की जाएगी।

(2) सभी बंधपत्र जिनकी बाबत विनियम 10 के अधीन आदेश पारित किया गया है ऐसा आदेश पारित किए जाने के पश्चात् प्रकाशित अगली पहली सूची में सम्मिलित किए जाएंगे और उसके पश्चात् ऐसे बंधपत्र प्रत्येक उत्तरवर्ती सूची में प्रथम प्रकाशन की तारीख से चार वर्ष की समाप्ति तक सम्मिलित किए जाते रहेंगे।

(3) सूची में सम्मिलित प्रत्येक बंधपत्र के संबंध में निम्नलिखित विशिष्टियां होंगी अर्थात् निर्गम का नाम, बंधपत्र का संख्यांक, उसका मूल्य, उस व्यक्ति का नाम जिसे वह निर्गमित किया गया था, वह तारीख जिससे उस पर ब्याज लगेगा, दूसरी प्रति के लिए आवेदक का नाम, ब्याज के संदाय या दूसरी प्रति के निर्गमन के लिए विहित अधिकारी द्वारा पारित आदेश का संख्यांक और तारीख तथा उस सूची के, जिसमें बंधपत्र पहली बार सम्मिलित किया गया था, प्रकाशन की तारीख।

13. किसी विकृत बंधपत्र का ऐसे बंधपत्र के रूप में अवधारण जिसके लिए दूसरी प्रति अपेक्षित है

किसी बंधपत्र का, जो विकृत या विरूपित हो गया है, ऐसे बंधपत्र के रूप में अवधारण करना कि उसके लिए विनियम 10 के अधीन दूसरी प्रति का निर्गमन या विनियम 16 के अधीन मात्र नवीकरण अपेक्षित है विहित अधिकारी के विकल्प पर होगा।

14. वचनपत्र के रूप में बंधपत्र का नवीकरण किए जाने की कब अपेक्षा की जा सकेगी

(1) निर्गम कार्यालय द्वारा वचनपत्र के रूप में किसी बंधपत्र के धारक से निम्नलिखित किसी दशा में उसके नवीकरण के लिए उसकी रसीद देने की अपेक्षा की जा सकेगी, अर्थात् :—

(क) यदि बंधपत्र की पिछली ओर केवल एक और पृष्ठांकन के लिए ही पर्याप्त स्थान बचा है या यदि बंधपत्र पर विद्यमान पृष्ठांकन या पृष्ठांकनों के आर-पार कोई शब्द लिखा जाता है;

(ख) यदि बंधपत्र फटा हुआ है या किसी प्रकार क्षतिग्रस्त है या उस पर अत्यधिक लिखावट है या निर्गम कार्यालय की राय में वह अनुपयुक्त है;

- (ग) यदि कोई पृष्ठांकन स्पष्ट और सुभिन्न नहीं है या यथास्थिति, पाने वाले या पाने वालों को नाम से उपदर्शित नहीं करता है या पृष्ठांकन बंधपत्र की पिछली और पृष्ठांकन खानों में से एक में करने की बजाए अन्यथा किया जाता है;
- (घ) यदि बंधपत्र पर ब्याज दस वर्ष या अधिक के लिए अनाहरित रहा है;
- (ङ) यदि बंधपत्र की उल्टी ओर ब्याज खाने पूर्णतया भर गए हैं या यदि बंधपत्र की उल्टी ओर रिक्त मुद्रित खाने उन अर्ध-वर्षों से मेल नहीं खाते हैं जिनके लिए, उस तारीख को जब बंधपत्र ब्याज के आहरण के लिए प्रस्तुत किया जाता है, ब्याज शोध्य हो गया है;
- (च) यदि ब्याज के संदाय के लिए बंधपत्र के तीन बार मुखौंकन पर वह पुनः मुखौंकन के लिए प्रस्तुत किया जाता है; और
- (छ) यदि निर्गम कार्यालय की राय में ब्याज के संदाय के लिए बंधपत्र प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति का हक अनियमित या पूर्णतया साबित नहीं हुआ है।
- (2) जब बंधपत्र के नवीकरण के लिए उप-विनियम (1) के अधीन अध्यपेक्षा की गई है तो उस पर ब्याज का आगे कोई संदाय करने से तब तक इंकार किया जाएगा जब तक नवीकरण के लिए उसकी रसीद नहीं दी जाती है और वह वास्तव में नवीकृत नहीं किया जाता है।
15. वह व्यक्ति जिसका मृत एक-मात्र धारक के बंधपत्र पर हक मान्य हो सकेगा :
- (1) किसी बंधपत्र के मृत एक-मात्र धारक के (चाहे हिंदू, मुसलमान, पारसी हो या अन्यथा) निष्पादक या प्रशासक या बंधपत्र की बाबत भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 (1925 का 39) के भाग X के अधीन जारी किए गए उत्तराधिकार प्रमाणपत्र का धारक केवल ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्हें (विहित अधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष अनुदेशों के अधीन रहते हुए) निर्गम कार्यालय द्वारा बंधपत्र पर कोई हक रखने वाले व्यक्तियों के रूप में मान्यता दी जा सकेगी।
- (2) भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 (1872 का 9) की धारा 45 में किसी बात के होते हुए भी दो या अधिक धारकों को निर्गमित, विक्रीत या संदेय अभिनिर्धारित किसी बंधपत्र की दशा में उत्तरजीवी और अंतिम उत्तरजीवी की मृत्यु पर उसके निष्पादक, प्रशासक या कोई व्यक्ति जो ऐसे बंधपत्र की बाबत उत्तराधिकार प्रमाणपत्र का धारक है केवल ऐसा व्यक्ति होगा (विहित अधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष अनुदेशों के अधीन रहते हुए) बंधपत्र पर कोई हक रखने वाले व्यक्ति के रूप में मान्यता दी जा सकेगी।
- (3) निर्गम कार्यालय ऐसे निष्पादकों या प्रशासकों को तब तक मान्यता देने के लिए आबद्ध नहीं होगा जब तक उन्होंने उस स्थान पर, जहां निर्गम कार्यालय स्थित है, प्रभाव रखने वाले भारत में किसी सक्षम न्यायालय या कार्यालय से, यथास्थिति, प्रोबेट या प्रशासन पत्र अधिप्राप्त न कर लिए हों परंतु यह कि किसी मामले में जहां विहित अधिकारी अपने पूर्ण विवेक से ठीक समझता है वहां क्षतिपूर्ति के बारे में ऐसे निबंधनों पर या अन्यथा, जैसा वह ठीक समझे, प्रोबेट या प्रशासन पत्रों या अन्य विधिक व्यपदेशन से छूट देना उसके लिए विधिपूर्ण होगा।
16. नवीकरण के लिए रसीद, आदि :
- (1) विहित अधिकारी के किन्हीं साधारण या विशेष अनुदेशों के अधीन रहते हुए धारक के आवेदन पर निर्गम कार्यालय अपने आदेश द्वारा—
- (क) वचनपत्र या वचनपत्रों के रूप में बंधपत्र या बंधपत्रों के उसके द्वारा परिदत्त किए जाने पर और अपने दावे के न्यायसंगत होने के बारे में निर्गम कार्यालय का समाधान करने पर वचनपत्र या वचनपत्रों का नवीकरण, उप-विभाजन या समेकन कर सकेगा परंतु तब जब वचनपत्र या वचनपत्रों को, यथास्थिति, प्ररूप I, II, III में रसीद दे दी गई है; या
- (ख) वचनपत्र या वचनपत्रों को स्टॉक प्रमाणपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्रों में संपरिवर्तित कर सकेगा परंतु तब जब वचनपत्र या वचनपत्रों पर निम्नलिखित रूप में पृष्ठांकन कर दिया गया है या कर दिए गए हैं—
- “भारतीय औद्योगिक विकास बैंक को संदाय करें”; या
- (ग) स्टॉक प्रमाणपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्रों का नवीकरण, उप-विभाजन या समेकन कर सकेगा परंतु तब जब स्टॉक प्रमाणपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्रों की प्ररूप VI, VII या VIII में रसीद दे दी गई है;
- (घ) स्टॉक प्रमाणपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्रों को वचनपत्र या वचनपत्रों में संपरिवर्तित कर सकेगा परंतु तब जब स्टॉक प्रमाणपत्र या स्टॉक प्रमाणपत्रों की प्ररूप IX में रसीद दे दी गई है, या
- (ङ) एक आवली के बंधपत्रों को किसी अन्य आवली के बंधपत्रों में संपरिवर्तित कर सकेगा परंतु तब जब—
- (I) अंतः आवली संपरिवर्तन अनुज्ञेय है; और
- (II) ऐसे संपरिवर्तन को शासित करने वाली शर्तों का पालन किया जाता है।

- (2) निर्गम कार्यालय, विहित अधिकारी के आदेशों के अधीन किसी बंधपत्र के उप-विनियम (1) के अधीन नवीकरण, उप-विभाजन या समेकन के लिए आवेदक से विहित अधिकारी द्वारा अनुमोदित एक या अधिक प्रतिभुओं सहित प्ररूप IV में क्षतिपूर्ति निष्पादित करने की अपेक्षा कर सकेगा।
17. हक के बारे में विवाद की दशा में बंधपत्र का नवीकरण जहां किसी बंधपत्र पर, जिसकी बाबत नवीकरण के लिए आवेदन किया गया है, हक के बारे में कोई विवाद है वहां विहित अधिकारी :—
- (क) जहां विवाद के किसी पक्षकार ने सक्षम अधिकारिता वाले किसी न्यायालय से उसे ऐसे बंधपत्र का हकदार घोषित करने वाला अंतिम विनिश्चय अभिप्राप्त कर लिया है ऐसे पक्षकार के पक्ष में नवीकृत बंधपत्र निर्गमित कर सकेगा; या
- (ख) जब तक ऐसा विनिश्चय अभिप्राप्त नहीं कर लिया जाता है बंधपत्र का नवीकरण करने से इंकार कर सकेगा।

स्पष्टीकरण :

इस विनियम के प्रयोजनों के लिए "अंतिम विनिश्चय" पद से ऐसा विनिश्चय अभिप्रेत है जो अपीलनीय नहीं है या ऐसा विनिश्चय है जो अपीलनीय तो है किंतु जिसके विरुद्ध विधि द्वारा अनुज्ञात परिसीमा अवधि के भीतर अपील फाइल नहीं की गई है।

18. नवीकृत बंधपत्र की बाबत दायित्व, आदि :

जब किसी व्यक्ति के पक्ष में विनियम 10 के अधीन दूसरी प्रति निर्गमित कर दी गई है या नवीकृत बंधपत्र निर्गमित कर दिया गया है या विनियम 16 के अधीन उप-विभाजन या समेकन पर नया बंधपत्र निर्गमित कर दिया गया है तब इस प्रकार निर्गमित बंधपत्र विकास बैंक और ऐसे व्यक्ति और उसके पश्चात् उसकी मार्फत हक व्युत्पन्न करने वाले सभी व्यक्तियों के बीच नई संविदा गठित करने वाला समझा जाएगा।

19. उन्मोचन :

विकास बैंक परिपक्वता पर संदत बंधपत्र या बंधपत्रों की बाबत या जिस या जिन के स्थान पर दूसरी प्रति, नवीकृत, उप-विभाजित या समेकित बंधपत्र निर्गमित किया गया है या किए गए हैं—

- (क) संदाय की दशा में उस तारीख से, जिसको संदाय शोध्य था, चार वर्ष बीत जाने के पश्चात्;
- (ख) बंधपत्र की दूसरी प्रति की दशा में विनियम 12 के अधीन सूची के, जिसमें बंधपत्र प्रथम बार वर्णित किया जाता है, प्रकाशन की तारीख से या विनियम 10 में निर्दिष्ट मूल बंधपत्र पर ब्याज के संदाय की तारीख से, जो भी तारीख पश्चातवर्ती हो, चार वर्ष बीत जाने के पश्चात् ;
- (ग) नवीकृत बंधपत्र या उप-विभाजन या समेकन पर निर्गमित नए बंधपत्र की दशा में उसके निर्गमन की तारीख से चार वर्ष बीत जाने के पश्चात्,

सभी दायित्व से उन्मोचित हो जाएगा।

20. ब्याज की बाबत उन्मोचन :

जैसा बंधपत्र के निबंधनों में अभिव्यक्त रूप से अन्यथा उपबंधित है उसके सिवाय कोई भी व्यक्ति ऐसे बंधपत्र पर किसी अवधि की बाबत, जो उस पूर्वतम तारीख के, जिसको ऐसे बंधपत्र पर शोध्य रकम के संदाय के लिए मांग की जा सकती थी, पश्चात् बीत गई है, ब्याज का हकदार नहीं होगा।

21. बंधपत्र का उन्मोचन :

- (क) जब वचन-पत्र या स्टॉक प्रमाण-पत्र के रूप में धारित बंधपत्र मूल धन के संदाय के लिए शोध्य हो जाता है तो वह उसकी उल्टी और धारक द्वारा सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित रूप में विकास बैंक के ऐसे कार्यालय में, जिसमें उस पर ब्याज संदेय है या निर्गम कार्यालय में प्रस्तुत किया जाएगा;
- (ख) जब खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्र मूल धन के संदाय के लिए शोध्य हो जाता है तो धारक द्वारा प्ररूप XIV में हस्ताक्षरित रसीद निर्गम कार्यालय को दी जाएगी।

22. विकास बैंक की ओर से शक्तियों का प्रयोग :

विकास बैंक द्वारा विनियम 4 (2), 5 (2), 5 (7) और 7 (1) के अधीन शक्तियों का विकास बैंक की ओर से प्रयोग अध्यक्ष और, या प्रबंध निदेशक और उसकी, उनकी अनुपस्थिति में विकास बैंक के कार्यपालक निदेशक द्वारा किया जाएगा।

अनुसूची

प्ररूप 1 (विनियम 16(1)(क) देखें)
वचनपत्र के रूप में वचनपत्र के नवीकरण के लिए पृष्ठांक न
का
प्ररूप

इसके बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
(स्थान)

द्वारा सदेय ब्याज सहित
(धारक का नाम)

को सदेय नवीकृत वचनपत्र प्राप्त किया।

धारक, के सम्यक्
(धारक का नाम)

रूप से प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

प्ररूप II (विनियम 16 (1)(क) देखें)
वचनपत्र के रूप में वचनपत्र के उप-विभाजन के लिए पृष्ठांक न
का
प्ररूप

इसके बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
(स्थान)

द्वारा सदेय ब्याज सहित
(धारक का नाम)

को सदेय रूप के लिए वचनपत्र प्राप्त किए

धारक, के सम्यक् रूप से
(धारक का नाम)

प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

प्ररूप III (विनियम 16 (1) (क) देखें)
वचनपत्र के रूप में वचनपत्रों के समेकन के पृष्ठांकन
का
प्ररूप

इसके बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक,
 (स्थान)

द्वारा संदेय ब्याज सहित (उसके साथ समेकित किए जाने के लिए अंशित अन्य वचनपत्र (वचनपत्रों) का, के संख्यांक और रकम (रकमों) का वर्णन करते हुए तथा निर्गम को विनिर्दिष्ट करते हुए) वचनपत्र संख्यांक (संख्यांकों) के साथ समेकन द्वारा रूप के लिए
 (धारक का नाम)

को संदेय नया वचनपत्र प्राप्त किया।

धारक, के सम्यक् रूप से प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर
 (धारक का नाम)

प्ररूप IV (विनियम 16(2) देखें)

इस विलेख द्वारा हम का पुत्र जो
 का निवासी है और का पुत्र
 जे

(प्रतिभू.स. 1)

का निवासी है और का पुत्र

(प्रतिभू.स. 2)

जो का निवासी है अपने आपकी और हम में से प्रत्येक को, हमारे और हमारे प्रत्येक वारिस, निष्पादक, प्रशासक और प्रतिनिधि को और उन सभी को संशुक्त और पृथक् भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम, 1964 के अधीन स्थापित भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (जिसे इसमें आगे उक्त विकास बैंक कहा गया है) उक्त विकास बैंक, उसके कुछ अटर्नियों,

उत्तरवर्तियों और समनुदेशितियों को रूप की राशि का संदाय करने के लिए आबद्ध करते हैं और मैं/हममें से प्रत्येक उक्त और

(मूल आवेदक का नाम)

(प्रतिभू. प्रतिभू.ओं का नाम)

उक्त विकास बैंक के साथ प्रसविदा करते हैं कि यदि इस बाध्यता की विषयवस्तु या इसके अधीन लिखी गई किसी शर्त के संबन्ध में कोई वाद मुंबई उच्च न्यायालय के अधीनस्थ किसी न्यायालय में लाया जाता है तो वह उक्त विकास बैंक के अनुरोध पर, चाहे ऐसे वाद में कोई भी फलस्कार हो, मुंबई में उसकी असाधारण आरम्भिक सिविल अधिकारिता में उच्च न्यायालय में बुला लिया, विचारित और अवधारित किया जाएगा।

उक्त

(मूल आवेदक का नाम)

ने इसकी अनुसूची में वर्णित उक्त विकास बैंक द्वारा निर्गमित बंधपत्र (बंधपत्रों) के नवीकरण, उप-विभाजन, समेकन के लिए उक्त विकास बैंक से आवेदन किया है।

और उक्त विकास बैंक अच्छे और पर्याप्त दो प्रतिभूओं सहित इसके नीचे लिखी गई शर्त के अधीन रहते हुए उपरिलिखित बंधपत्र निष्पादित करने पर उक्त

(मूल आवेदक का नाम)

का आवेदन स्वीकार करने के लिए सहमत हो गया है:

और उक्त आबद्ध

(प्रतिभू, प्रतिभूओं का नाम)

उक्त

(मूल आवेदक का नाम)

के लिए प्रतिभू होने के लिए उपरिलिखित बंधपत्र निष्पादित करने में उक्त

(मूल आवेदक का नाम)

के साथ सम्मिलित होने के लिए सहमत हो गया है, हो गए हैं।

उपरिलिखित बंधपत्र की शर्तें ऐसी हैं कि यदि उक्त आबद्ध

(मूल आवेदक का नाम)

और

(प्रतिभू, प्रतिभूओं का नाम)

या उनमें से प्रत्येक या उनके वारिस, प्रशासक या प्रतिनिधि या उनमें से कोई या उनमें से कोई एक इसकी अनुसूचियों में वर्णित उक्त विकास बैंक द्वारा निर्गमित बंधपत्र (बंधपत्रों) का या उन पर ब्याज का हकदार होने का दावा करने वाले सभी व्यक्तियों के या किन्हीं अन्य व्यक्तियों के उक्त बंधपत्रों या उनके नवीकरण या उन पर ब्याज के संदाय के दावों और मांगों से और विरुद्ध

तथा सभी नुकसानों, हानियों, खर्चों, प्रभारों और व्यय से और उनके विरुद्ध जो उक्त बैंक किसी ऐसे दावे या मांग के परिणामस्वरूप या यथाउपर्वक्त नवीकृत बंधपत्र (बंधपत्रों) के निर्गमन के या उक्त बंधपत्र (बंधपत्रों) या नवीकृत बंधपत्र (बंधपत्रों) पर शोध्य किसी ब्याज के संदाय के कारण उठाए, उपगत करे या उसके लिए दायी हो, उक्त विकास बैंक की समय-समय पर और उसके पश्चात् सभी समयों पर प्रभावी रूप से रक्षा, प्रतिरक्षा नहीं करेगा, उसे हानिरहित और क्षतिपूर्ति नहीं रखेगा तो उपरिलिखित बंधपत्र शून्य होगा किन्तु अन्यथा वह पूर्णतया प्रवृत्त और प्रभावशील होगा।

(मूल आवेदक का नाम)

द्वारा की और की उपस्थिति में हस्ताक्षरित और परिदत्त।

तारीख :

इसमें निर्दिष्ट अनुसूची

बंधपत्र की प्रकृति और वर्णन

संख्यांक

निर्गमन की तारीख रकम

प्ररूप V (विनियम 3(3) देखें)

अंतरण का प्ररूप

मै/ हम

(धारक (धारकों) का नाम)

..... प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र, के अंतर्लिखित स्टॉक में मेरे/ हमारा हिस्सा या भाग जो रूपए के लिए स्टॉक की रकम, उसका भाग है जो इस लिखत के मुख पर विनिर्दिष्ट है उस पर ब्याज सहित

(अंतरिती, अंतरितियों का नाम)

....., उसमें/ उनके निष्पादकों, प्रशासकों या समनुदेशितियों को इसके द्वारा समनुदेशित और अंतरित करता हूँ/ करते हैं और मै/ हम

(धारक (धारकों) का नाम)

उपरोक्त स्टॉक को उन विस्तार तक जिस तक वह मुझे/ हमें अंतरित किया गया है निर्बाध रूप से स्वीकार करता हूँ/ करते हैं।

मै/ हम

(अंतरिती, अंतरितियों का नाम)

इसके द्वारा अनुरोध करता हूँ/ करते हैं कि मुझे/ हमें इसके द्वारा अंतरित स्टॉक के धारक/ धारकों के रूप में रजिस्ट्रीकृत किए जाने पर उपरोक्त स्टॉक प्रमाणपत्र उस विस्तार तक जिस तक वह मुझे/ हमें अंतरित किया गया है मेरे/ हमारे नाम (नामों) में नवीकृत/ संपरिवर्तित किया जाए।

*मै/ हम

(धारक (धारकों) का नाम)

इसके द्वारा अनुरोध करता हूँ/ करते हैं कि उपरोक्त (अंतरिती, अंतरितियों) को स्टॉक के धारक (धारकों) के रूप में इसके द्वारा रजिस्ट्रीकृत किए जाने पर उपरोक्त स्टॉक प्रमाण पत्र उस विस्तार तक जिस तक वह उसे, उन्हें अंतरित नहीं किया गया है, मेरे/ हमारे नाम (नामों) में नवीकृत किया जाए।

हम उपरिनामित अंतरक द्वारा ** की उपस्थिति में हस्ताक्षरित के साक्षी के रूप में आज 199..... को इस पर अपने हस्ताक्षर करते हैं।

पता :

(अंतरिती):

पता :

उपरिनामित अंतरिती द्वारा :

की उपस्थिति में हस्ताक्षरित।

* इस पैरा का तब उपयोग किया जाना है जब प्रमाण पत्र का भाग अंतरित किया जाता है।

** साक्षी के हस्ताक्षर, उपजीविका और पता :

प्ररूप VI (विनियम 16 (1)(ग) देखें)
 स्टॉक प्रमाणपत्र के नवीकरण के लिए पृष्ठांक न
 का
 प्ररूप
 इसके बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक,
 (स्थान)

द्वारा संदेय ब्याज सहित के नाम में रुपए के लिए
 प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र (वर्ष) का नवीकृत स्टॉक प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

रजिस्ट्रीकृत धारक/ सम्यक् रूप से
 प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

.....
 (रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

प्ररूप VII (विनियम 16 (1)(ग))
 स्टॉक प्रमाणपत्र के उप-विभाजन के लिए पृष्ठांक न
 का
 प्ररूप
 इस स्टॉक प्रमाणपत्र के बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक,
 (स्थान)

द्वारा संदेय ब्याज सहित प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र
 (वर्ष)
 के रुपए के लिए क्रमशः स्टॉक प्रमाण पत्र संख्या प्राप्त किए।

रजिस्ट्रीकृत धारक/ सम्यक् रूप से
 प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

.....
 (रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

प्रत्यक्ष VIII (विनियम 16 (1)(ग) देखें)

स्टाक प्रमाणपत्रों समेक न के लिए पृष्ठांक न

का

प्रत्यक्ष

..... प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र,

(वर्ष)

के रुपए के लिए क्रमशः स्टॉक प्रमाणपत्र संख्या के बदले में भारत
प्रीय औद्योगिक विकास बैंक,

(स्थान)

द्वारा सदेय ब्याज सहित प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र,

(वर्ष)

का रुपए के लिए स्टॉक प्रमाणपत्र प्राप्त किया.

रजिस्ट्रीकृत धारक/ सम्बन्धित रूप से
प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

.....
(रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

प्रत्यक्ष IX (विनियम 16 (1)(घ) देखें)

स्टाक प्रमाणपत्रों का वचनपत्रों में संपरिवर्तन करने के लिए पृष्ठांकन

का

प्रत्यक्ष

हस स्टॉक प्रमाणपत्र के बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक,

(स्थान)

द्वारा सदेय ब्याज सहित रुपए की बकाया रकम के लिए नए स्टॉक प्रमाणपत्र सहित रुपए प्रति
वचनपत्र के वचनपत्र प्राप्त किए.

रजिस्ट्रीकृत धारक/ सम्बन्धित रूप से
प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

.....
(रजिस्ट्रीकृत धारक का नाम)

प्ररूप X (विनियम 5 (2) (ख) (III) देखें)
स्टाफ प्रमाणपत्र के रूप में निर्गमित बंधपत्र के नवीकरण के लिए रसीद का प्ररूप

इसके बदले में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक _____
(स्थान) द्वारा संदेय ब्याज सहित _____ के पक्ष में
_____ रुपये के लिए _____ प्रतिशत भारतीय औद्योगिक विकास
बैंक बंधपत्र, _____ का नवीकृत स्टाफ प्रमाणपत्र प्राप्त किया .
(वर्ष)

(रजिस्ट्रीकृत धारक के हस्ताक्षर)

प्ररूप XI (विनियम 3(3क) (ग) देखें)
वचनपत्र के रूप में बंधपत्र का विकास बैंक के पास खाते में
प्रविष्टि में संप्रवर्तन करने के लिए अध्यक्ष

तारीख _____ 19____

सेवा में,

प्रबंधक
बंधपत्र अनुभाग,
भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
मुम्बई

महोदय,

विषय : _____ % भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
बंधपत्र _____ (_____ आवली)

हम इसके द्वारा घोषित करते हैं कि इसकी उल्टी ओर सूचीबद्ध _____ रुपए के कुल अंकित मूल्य के वचनपत्र (वचनपत्रों) के रूप में निर्गमित भारतीय औद्योगिक विकास बैंक बंधपत्र हमारी संपत्ति है/हैं और अनुरोध करते हैं कि उसे/उन्हें भारतीय औद्योगिक विकास बैंक द्वारा बनाए रखे गए खाते में हमारे नाम में प्रविष्टि के रूप में धारण करने की हमें अनुशा दी जाए जिस प्रयोजन के लिए हम विकास बैंक के पक्ष में सम्यक् रूप से पृष्ठांकित सुसंगत बंधपत्र स्क्रिप उसके साथ अभ्यर्पित कर रहे हैं .

उस व्यक्ति, उन व्यक्तियों का, जो खाते का परिचालन करने के लिए प्राधिकृत किया गया है/किए गए हैं, नाम, पदनाम और नमूना हस्ताक्षर उसकी उल्टी ओर दिए गए ब्योरो के अनुसार है :

इस संबंध में हम इसके साथ आपके प्रारूप के अनुसार सम्यक् रूप से स्टांपित और हमारी ओर से निष्पादित क्षतिपूर्ति विलेख इसके साथ संलग्न कर रहे हैं.

हम आपसे अनुरोध करते हैं कि विकास बैंक के पास खाते के रूप में बंधपत्र धारण करने का प्रमाणपत्र और हमारी धृति का कालिक विवरण सम्यक् अनुक्रम में हमें दिए गए पते पर भेजने की कृपा करें.

इस दौगन कृपया पावती दें .

भवदीय

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों) उसके सम्यक्
रूप से प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों) का/ के नाम

इसके साथ संलग्न बंधपत्र स्लिप्सों की सूची

नीचे कथित रूप में अंकित मूल्य (मूल्यों) में वचनपत्र

1. _____ रुपए के लिए बंधपत्र स्लिप सं. _____
तारीख _____ (_____ आवली)
2. _____ रुपए के लिए बंधपत्र स्लिप सं. _____
तारीख _____ (_____ आवली)
3. _____ रुपए के लिए बंधपत्र स्लिप सं. _____
तारीख _____ (_____ आवली)

बंधपत्र स्लिप्सों का कुल अंकित मूल्य _____ रुपए अकेले, संयुक्त रूप में, बीवी या उत्तरजीवी के नमूना हस्ताक्षर _____

नाम 1. _____ पदनाम _____
2. _____ पदनाम _____

पता : _____

टेलीफोन: _____ टेलीक्स _____

संलग्नक (1) _____ रुपए कुल मूल्य के लिए बंधपत्र स्लिप

(2) क्षतिपूर्ति विलेख

प्ररूप XII (विनियम 3 (3 क) (ड) देखें)
विकास बैंकके पास खाते में प्रविष्टि के रूप में धारित
बंधपत्रों के बदले में बंधपत्र स्क्रिप्स के निर्गमन के लिए अध्यक्ष

सेवा में,

प्रबंधक
बंधपत्र अनुभाग,
भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
मुम्बई

महोदय,

विषय : _____ % भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
बंधपत्र _____ आवली)

हम विकास बैंक द्वारा बनाए रखे गए खाते में प्रविष्टि के रूप में हमारे द्वारा धारित बंधपत्रों की बाबत विकास बैंक द्वारा निर्गमित धृति-प्रमाणपत्र इसके साथ भेज रहे हैं।

हमारा अनुरोध है कि हमारी बंधपत्र धृतियाँ इसकी उल्टी ओर दिए गए ब्यौरों के अनुसार वचनपत्र (वचनपत्रों) के रूप में संपरिवर्तित और अंतरित की जाएं।

हमारा अनुरोध है कि इस संबंध में बंधपत्र स्क्रिप्स उन बंधपत्रों की, जो विकास बैंक द्वारा बनाए रखे गए खाते में प्रविष्टि के रूप में धारण किए जा रहे हैं, बनाया रकम की बाबत धृति-प्रमाणपत्र के साथ हमें हमारे ऊपर दिए गए पते पर रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा भेजे जाएं।

इस दौरान कृपया पावती दें।

भवदीय

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों) उसके सम्यक् रूप
से प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों) का / के
नाम _____

अपेक्षित वचनपत्रों के व्यौरे

1. धृति-प्रमाणपत्र संख्या _____ तारीख _____
रुपए (_____ आवली)

2. धृति प्रमाणपत्र संख्या.....तारीख _____
रुपए (_____ आवली)

3. धृति प्रमाणपत्र संख्या _____ तारीख _____
रुपए (_____ आवली)

बंधपत्रों का कुल अंकित मूल्य _____ रुपए है जिसके लिए ऐसे अंकित मूल्यों में जैसे नीचे
कथित किए गए हैं, बंधपत्र स्क्रिप निर्गमित करने को कृपा करें:

अंकित मूल्य	संख्या	कुल अंकित मूल्य
-----	-----	-----
(1) 1,000 रुपए प्रति बंधपत्र स्क्रिप		रुपए
(2) 10,000 रुपए प्रति बंधपत्र स्क्रिप		रुपए
_____ रुपए	के कुल अंकित मूल्य के कुल	
_____ स्क्रिप		

हमारा अनुगोच है कि बंधपत्रों को बकाया रकम विकास बैंक द्वारा रखे गए खातों में प्रविष्टि के रूप में धारित बनी रहे.

प्ररूप X III (विनियम 3 (3) क (छ) देखें)

विकास बैंक के पास खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्रों के अंतरण का प्ररूप

हम _____ विकास बैंक के पास खाते में प्रविष्टि के रूप में बंधपत्रों
के धारक _____ रुपए तक हमारी धृति जो हमारी पूर्ण धृति, उसका भाग है उस पर
_____ तक प्रोद्भूत ब्याज सहित _____ के
और उसके पक्ष में उसके द्वारा समनुदेशित और अंतरित करते हैं.

हम _____ उपरोक्त बंधपत्रों का हमारे नाम में निर्बाध रूप में अंतरण स्वीकार
करते हैं.

हम अपने हस्ताक्षर आज _____, 19____ को करते हैं.
उपरिनामित _____ (वित्रेता) द्वारा _____ की उपस्थिति में हस्ताक्षरित.

उपनिमित _____ (वित्रेता) द्वारा _____ की उपस्थिति में हस्ताक्षरित.

टिप्पण: (उस राज्य के जिसमें यह निष्पादित किया जाता है, स्थानीय स्टॉप अधिनियम द्वारा यथासंशोधित) भारतीय स्टॉप
अधिनियम, 1899 के अनुच्छेद 62 (ग) के अनुसार स्टॉपित किया जाएगा.

प्ररूप I (विनियम 21 (ख) देखें)
विकास बैंकके पास खाते में प्रविष्टि के रूप में धारित बंधपत्रों के उन्मोचन का प्ररूप

सेवा में,

प्रबंधक
 बंधपत्र अनुभाग,
 भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
मुम्बई

महोदय,

विषय : (भारतीय औद्योगिक विकास बैंक
बंधपत्र (.....आवली)

..... (बंधपत्र धारक) के नाम जमा भारतीय औद्योगिक विकास बैंक की बहियों में प्रविष्टि के रूप में धारित रुपए (..... रुपए) के अभिहित अंकित मूल्य के शीर्षक वाले बंधपत्र (बंधपत्रों) पर परिपक्वता की तारीख के प्रोद्भूत ब्याज सहित मूल रकम प्राप्त की यह प्रमाणित किया जाता है कि बंधपत्र (बंधपत्रों) की अभिहित रकम और परिपक्वता की तारीख तक प्रोद्भूत ब्याज मेरी/हमारी बहियों से मेल खाता है.

भवदीय

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों)/ उसके सम्यक् रूप से
 प्राधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रीकृत धारक(धारकों) व/ के नाम

तारीख

स्थान

बी. डी. उशीर, मुख्य महा प्रबंधक (विधि)

प्रमाणित किया जाता है कि भारत सरकार ने दिनांक 22-5-1996 के अपने पत्र एफ. सं. 10 (23) आई. एफ. आई./93 द्वारा भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (बंध पत्रों का निर्गम और प्रबंध) विनियम, 1972 में संशोधनों को अनुमोदन प्रदान कर दिया है ।

INDUSTRIAL DEVELOPMENT BANK OF INDIA**(ISSUE AND MANAGEMENT OF BONDS)****REGULATIONS, 1972****NOTIFICATION**

New Delhi, the 6th February, 1997

F. No. LD 2897.—In exercise of the powers conferred by Section 37 of the Industrial Development Bank of India Act, 1964 (18 of 1964), the Board, with the previous approval of the Central Government, makes the following amendments to the Industrial Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1972, namely :—

1. (1) These regulations may be called the Industrial Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) (Amendment) Regulations, 1996.
 - (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
 2. In the Industrial Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1972,—
 - (a) for regulation 9, the following regulation shall be substituted namely :—
9. Publication of notice of loss, theft, etc. in newspaper.—The loss, theft, destruction (mutilation or defacement) of a Bond in the form of a promissory note shall be published on behalf of the applicant in a leading newspaper of the area.'

Explanation :—The Development Bank shall decide from time to time as to which of the newspaper shall be deemed to be 'leading' newspaper for the area, under jurisdiction of the Office of Issue.

(2) The publication referred to in sub-rule (1) shall be in the following form or nearly in such form as circumstances permit, namely:—

"The Industrial Development Bank of India Bond No..... of the..... percent Bond..... for Rs..... originally standing in the name of last endorsed to.....the proprietor, by whom it was never endorsed to any other person having been Lost/Stolen/ Destroyed/(Mutilated/Defaced), notice is hereby given that payment of the above bond and the interest thereupon has been stopped at the Office of the Issue, and that application is about to be made or has been made for the issue of a duplicate in favour of the proprietor. The public are cautioned against purchasing or otherwise dealing with the above-mentioned Bond";

(b) For regulation 10, the following regulation shall be substituted, namely :—

"10. Issue of duplicate bond and taking of indemnity bond :—If the Prescribed Officer is satisfied of the loss, theft, destruction or defacement of the Bond in the form of a promissory note, he may order issue of a duplicate Bond in the form of a promissory note on applicant's furnishing in indemnity bond with one or more sureties;

Provided that if at any time before the issue of the duplicate Bond in the form of a promissory note, the original Bond is discovered or it appears to the Office of the Issue for other reasons that the order should be rescinded, the matter shall be referred to the Board for further consideration, and in the meantime, all action on the order shall be suspended. An order passed under this sub-rule shall, on expiry of the three months referred to therein become final unless it is in the meantime rescinded or otherwise modified; and

Provided that where a Bond in the form of a promissory note lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced is of denomination not exceeding of rupees fifty thousand, a duplicate Bond in the form of promissory note may be issued on applicant furnishing an indemnity Bond without any such surety;

Provided further that where such application is made with respect to a Bond in the form of a promissory note mutilated or defaced, of whatever face value, a duplicate Bond in the form of promissory note may be issued without any such indemnity with or without surety, if the Bond in the form of promissory note is capable of being indentified as the one originally issued;

- (2) the Development Bank shall not incur any liability for issuing such bond in good faith under this regulation.
- (3) A duplicate certificate issued under sub-rule (1) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes of these rules except that it shall not be encashable at an office of issue other than the office of issue at which such certificate is registered without previous verification.

(c) In regulation 19, after clause (c), the following clause shall be inserted, namely:—

"(d) in the case of a duplicate Bond in the form of promissory note issued under regulation 10, immediately after issue thereof".

(d) for regulation 12, the following regulation shall be substituted, namely :—

"12. (1) Publication of list of duplicate Bonds :—The Development Bank shall publish half yearly in the two leading newspapers or in one leading newspaper and in the Gazette of India in the months of January and July a list of duplicate Bonds issued by the Development Bank.

(2) The list shall contain the following particulars regarding the duplicate Bonds by the Development Bank :—

- (a) the name of the issue,
- (b) the number of the Bond, its value,
- (c) the name of the person to whom it was issued,
- (d) the date from which it bears interest,
- (e) the name of the applicant for a duplicate,
- (f) the number and date of order passed by the Prescribed Officer for payment of interest or issue of a duplicate.

INDUSTRIAL DEVELOPMENT BANK OF INDIA

(ISSUE AND MANAGEMENT OF BONDS)

REGULATIONS, 1972

In exercise of the powers conferred by Section 37 of the Industrial Development Bank of India Act, 1964 (18 of 1964), the Board of Directors of the Industrial Development Bank of India, with the previous approval of the Reserve Bank of India, is pleased to make the following Regulations, namely :—

1. Short title and applications

- (1) These regulations may be called the Industrial Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1972.
- (2) They shall apply to Bonds issued and sold by the Development Bank under clause (a) of sub-section (1) of Section 11 of the Industrial Development Bank of India Act, 1964.

2. Definitions

In these regulations, unless there is anything repugnant to the subject or context,—

- (a) "the Act" means the Industrial Development Bank of India Act, 1964;
- (b) "Bonds" means the Bonds issued and sold by the Development Bank under clause (a) of sub-section (1) of Section 11 of the Act;
- (c) "Development Bank" means the Industrial Development Bank of India established under the Act;
- (d) "Defaced Bond" means a Bond which has been made illegible and rendered undecipherable in material parts and the material parts of a Bond are those where:—
 - (i) the number, the issue to which it appertains and the face value of the Bond, or payment of interest are recorded; or

- (ii) the endorsement or the name of the payee is written; or
- (iii) the renewal receipt or the memorandum of transfer is supplied;
- (e) "Form" means a form as set out in the Schedule to these regulations;
- (f) "Lost Bond" means a Bond which has actually been lost and shall not mean Bond is in possession of some person adversely to the claimant;
- (g) "Mutilated Bond" means a Bond which has been destroyed, torn or damaged in material parts thereof;
- (h) "Office of Issue" means the office of the Development Bank on the Books of which a bond is registered or may be registered;
- (i) "Prescribed Officer" means the General Manager or such officers of the Development Bank as may be authorised by the Board of Directors of the Development Bank for the purposes of Regulations 10, 11, 12, 13, 15, 16 and 17 ;
- (j) "Stock Certificate" means a Stock Certificate issued under Regulation 3.

3. Form of the Bond and the mode of transfer thereof, etc.

(1) A Bond may be issued in the form of —

- (a) A promissory note payable to, or to the order of, a certain person; or
- (b) Stock registered in the books of the Development Bank or which Stock Certificates are issued.

(2) (a) A Bond issued in the form of a promissory note shall be transferable by endorsement and delivery like a promissory note payable to order.

(b) No writing on a Bond issued in the form of a promissory note shall be valid for the purpose of negotiation if such writing purports to transfer only a part of the amount denominated by the Bond.

(3) A Bond issued in the form of a Stock Certificate and registered in the books of the Development Bank shall be transferable either wholly or in part by execution of an instrument of transfer in Form V. The transferor in such a case shall be deemed to be the holder of the Bonds issued in the form of Stock to which the transfer relates until the name of the transferee is registered by the Development Bank.

(3A) (a) Notwithstanding anything to the contrary herein contained, the Development Bank may, at the request of the person entitled to the Bonds, issue Bonds in the form of an entry in an account to be maintained by the Development Bank in the name of the person entitled to the Bonds.

(b) The Bonds may be so issued in the form of an entry in the books of accounts of the Development Bank either initially at the time of subscription to the Bonds or subsequently by conversion of the Bonds issued either in the form of a promissory note or Stock.

(c) If a Bond has already been issued in the form of a promissory note, the Bond holder desirous of holding it in the form of an entry in an account with the Development Bank shall make requisition in Form XI and surrender the Bond duly endorsed in favour of the Development Bank for the Bond being held in the form of an entry in an account in the books of the Development Bank.

(d) If the Bond has been issued in the form of Stock Certificate, the holder shall transfer the Bond in favour of the Development Bank with a request that the Bond may be held in the form of an entry in an account to be maintained by the Development Bank in the name of the holder.

(e) A person holding Bonds in the form of an entry in an account maintained by the Development Bank may have the Bonds transferred or converted in the form of a promissory note or a Stock Certificate by making an application in Form XII.

- (f) No fee is chargeable for issuing Bonds in the form of an entry in the account of the books of the Development Bank or converting Bonds already issued either in the form of a promissory note or Stock in the form of an entry in the books of the Development Bank or vice versa.
- (g) Bonds issued or held in the form of an entry in the books of the Development Bank shall be transferable by execution of an instrument of transfer in Form XIII. The transferor in such cases shall be deemed to be the holder of the Bonds to which the transfer relates till such time the name of the transferee is entered in the books of the Development Bank.
- (4) (a) A Bond shall be issued over the signature of the Chairman and/or Managing Director of the Development Bank which may be printed, engraved, lithographed or impressed by such other mechanical process as the Development Bank may direct.
- (b) A signature so printed, engraved, lithographed or otherwise impressed shall be as valid as if it had been inscribed in the proper handwriting of the signatory himself.
- (5) No endorsement of a Bond in the form of a promissory note or no instrument of transfer in the case of a Bond in the form of a Stock Certificate shall be valid unless made by the signature of the holder or his duly constituted attorney or representative inscribed in the case of a bond in the form of a promissory note on the back of the Bond itself and in the case of a Stock Certificate on the instrument of transfer.

4. Trust not recognised

- (1) The Development Bank shall not be bound or compelled or recognise in any way, even when having notice thereof, any trust or any right in respect of a Bond other than an absolute right thereto in the holder.
- (2) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1), the Development Bank may, as an act of grace and without liability to the Development Bank, record in its books such directions by the holder of a Bond issued in the form of Stock for the payment of interest on, or of the maturity value of, or the transfer of or such matters relating to the Stock as the Development Bank thinks fit.

5. Provision for holding Bonds issued in the form of the Stock Certificate by trustees and office holders

- (1) A Bond in the form of Stock Certificate may be held by a holder of an office—
 - (a) in his personal name, described in the books of the Development Bank in the Stock Certificate as a trustee whether as a trustee of the trust specified in his application or as a trustee without any such qualification; or
 - (b) by the name of his office.
- (2) On an application made in writing to the Development Bank in the Form required by the Development Bank the person in whose name a Bond stands and on surrender of the Bond, the Development Bank may—
 - (a) make an entry in its books describing him as a trustee of a specified trust or as a trustee without specification of any trust and issue a Stock Certificate in his name described as trustee with or without the specification of the trust as the case may be; or
 - (b) issue a Stock Certificate to him by the name of his office and make an entry in its books describing him as the holder of the Stock by the name of his office, according to the applicant's request provided—
 - (i) the request is in conformity with the provisions of sub-regulation (1) hereof;
 - (ii) the necessary evidence required by the Development Bank in terms of sub-regulation (7) has been furnished; and
 - (iii) the Bond, if it is in the form of promissory note, has been endorsed in favour of the Development Bank and if in the form of Stock Certificate, has been receipted by the registered holder in Form X.

- (3) The Stock Certificate under sub-regulation (1) may be held by the holder of the office either alone or jointly with another person or persons or with a person or persons holding an office.
- (4) When the Stock is held by a person in the name of his office, any documents relating to the Stock Certificate concerned may be executed by the person for the time being holding the office by the name in which the Stock Certificate is held as if his personal name were so stated.
- (5) Where any transfer deed, power of attorney or other document purporting to be executed by a Stock Certificate holder described in the books of the Development Bank as a trustee or as a holder of an office is produced to the Development Bank, the Development Bank shall not be concerned to inquire whether the Stock-holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to give any such power or to execute such deed or other document, and any act on the transfer deed, power of attorney or document in the same manner as though the executant is a Stock Certificate holder and whether the Stock Certificate holder is or is not described in the transfer deed, power of attorney or document as a trustee or as a holder of an office and whether he does or does not purport to execute the transfer deed, power of attorney or document in his capacity as a trustee or as a holder of the office.
- (6) Nothing in these regulations shall, as between any trustees or office holders and the beneficiaries, under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees or office holders to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust the terms of the instrument constituting the trust, or the rules governing the association of which the Stock Certificate holder is a holder of an office and neither the Development Bank nor any person holding or acquiring any interest in any Stock Certificate shall by reason only of any entry in any register maintained by the Development Bank in relation to any Stock Certificate or any Stock Certificate holder or of anything in any document relating to Stock Certificate be affected with notice of any trust or of the fiduciary character of any Stock Certificate holder or of any fiduciary obligation attaching to the holding of any Stock Certificate.
- (7) Before acting on any application made, or on any document purporting to be executed, in pursuance of this regulation by a person as being the holder of any office, the Development Bank may require the production of evidence that such person is the holder for the time being of that office.

5A Provision for holding of bonds issued in the form of promissory notes by trust/trustee(s)

- (1) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1) of regulation 4, the Development Bank may, at the request of the applicant and without liability to the Development Bank, issue a Bond in the form of promissory note in the name of a specified trust or trustee(s) of that trust, or, as the case may be, in the personal name of the applicant, describing him as a trustee, whether as a trustee of the trust specified in his application or as a trustee without such specifications.
- (2) Where a Bond in the form of promissory note stands in the personal name of the holder, the Development Bank may, on an application made by him in the form required by the Development and on surrender of such Bond, issue a renewed Bond, in the form of a promissory note in the manner laid down in sub-regulation (1) hereof provided that:—
 - (i) the necessary evidence required by the Development Bank in terms of sub-regulation (6) hereof has been furnished; and
 - (ii) the Bond has been endorsed in favour of the Development Bank.
- (3) The Bond under sub-regulation (1) may be held by a trustee of any trust either alone or jointly with another person or persons as trustees of that trust.
- (4) Where a Bond in the form of promissory note purports to have been endorsed by the Bond holder as a trustee, or where any power of attorney or other document purporting to be executed by the Bond holder is produced to the Development Bank, the Development Bank shall not be concerned to enquire whether the Bond holder is entitled under the terms of any trust or document or rules to make such endorsement or execute such power of attorney or other document, and may act on the endorsement, power of attorney or document in the same manner as though such endorser is a Bond holder and whether the Bond holder is or is not described in the endorsement, power of attorney or document as a trustee, and whether he does or does not purport to make endorsement or execute the power of attorney or document in his capacity as a trustee.

(5) Nothing in these regulations shall, as between any trustees and the beneficiaries, under a trust or any document or rules, be deemed to authorise the trustees to act otherwise than in accordance with the rules of law applying to trust or the terms of the instrument constituting the trust.

(6) Before acting on any application made, in pursuance of this regulation, by a person as being the trustee of any trust, the Development Bank may require the production of evidence that such person is the trustee for the time being of that trust.

6. Persons disqualified to be holders

No minor and no person who has been found by a competent court to be of unsound mind shall be entitled to be a holder of Bonds.

7. Payment of Interest

(1) Interest on a Bond in the form of a promissory note shall be paid by the Office of Issue or any other office of the Development Bank specified in the Bond Prospectus subject to compliance by the holder of the Bond with such formalities as the Development Bank may require, and on presentation of the Bond.

(2) Interest on a Bond in the form of Stock Certificate shall be paid by warrants issued by the Development Bank and payable at the various offices of the Reserve Bank of India. The presentation of the Stock Certificate shall not be required at the time of payment of interest but the payee shall acknowledge the receipt at the back of the warrant.

(3) Interest on a Bond held in the form of an entry in the books of the Development Bank shall be paid by the Development Bank by issue of warrants crossed account payee or in such other manner as may be agreed to by the Development Bank.

8. Procedure where Bond in the form of a promissory note is Lost, etc.

(1) Every application for the issue of a duplicate Bond in place of a Bond which is alleged to have been Lost, Stolen, Destroyed Mutilated or Defaced, either wholly or in part shall be addressed to the Office of Issue, and shall contain the following particulars, namely:—

(a) Bond No. for Rs. of the
percent Industrial Development Bank of India Bonds,

[year]

(b) Last half-year for which interest has been paid;

(c) The person to whom such interest was paid;

(d) The person in whose name Bond was issued (if known);

(e) The circumstances attending the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement; and

(f) Whether the Loss or Theft was reported to the police.

(2) Such application shall be accompanied by :—

(a) where the Bond was lost in the course of transmission by registered post, the Post Office registration receipt for the letter containing the Bond;

(b) a copy of the police report, if the loss or theft was reported to the police;

- (c) if the applicant is not the registered holder, an affidavit sworn before a magistrate testifying that the applicant was the last legal holder of the Bond, and all documentary evidence necessary to trace back the title to the registered holder; and
- (d) any portion or fragments which may remain of the Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced Bond.

9. Notification in Gazette

The Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of a Bond or portion of a Bond in the form of a promissory note shall forthwith notified by the applicant in three successive issues of the Gazette of India and of the local official Gazette, if any, of the place where the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement occurred. Such notification shall be in the following form or as nearly in such form as circumstances permit :—

"The Industrial Development Bank of India Bond No.....of theper cent Bondfor Rs.....originally standing in the name of.....and last endorsed to.....the proprietor, by whom it was never endorsed to any other person having been *Lost/Stolen/Destroyed/Mutilated/Defaced, notice is hereby given that payment of the above Bond and the interest thereupon has been stopped at the Office of Issue, and that application is about to be made or has been made for the issue of a duplicate in favour of the proprietor. The public are cautioned against purchasing or otherwise dealing with the above-mentioned Bond.

Name of person notifying.....

Residence....."

*Delete whichever is not applicable.

10. Issue of duplicate bond and taking of indemnity

(1) After the publication of the last notification prescribed in regulation 9, the Prescribed Officer shall if he is satisfied of the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of the Bond and of the justice of the claim of the applicant, cause the particulars of the Bond to be included in a list published under regulation 12, and shall order the Office of Issue—

(a) if only a portion of the bond has been Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced, and if a portion thereof sufficient for its identification has been produced, to pay interest and to issue to the applicant, on execution of an indemnity such as hereinafter mentioned a duplicate Bond in place of that of which a portion has been so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced either immediately after the publication of the list under regulation 12 or on the expiry of such period as the Prescribed Officer may consider necessary from the date of the publication of the said list;

(b) if no portion of the bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced, sufficient for its identification has been produced:—

(i) to pay to the applicant, two years after the publication of the said list, and on the execution of an indemnity in the manner hereinafter prescribed, the interest in respect of the Bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced till the expiry of the period of four years next as hereinafter provided; and

(ii) to issue to the applicant a duplicate Bond in place of the Bond so Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced four years after the date of publication of the said list, provided that:

(1) if the date on which the bond is due for repayment falls earlier than the date on which the said period of four years expires, the Prescribed Officer shall, within six weeks of the former date, invest the principal amount due on the bond in the Post Office Savings Bank, and shall repay this amount, together with any interest which may have accrued thereon in such Bank, to the applicant at the time when a duplicate Bond would otherwise have been issued, and

(II) if at any time before the issue of the duplicate Bond the original Bond is discovered or it appears to the Office of Issue for other reasons that the order should be rescinded, the matter shall be referred to the Prescribed Officer for further consideration and in the meantime all action on the order shall be suspended. An order passed under this sub-regulation shall, on expiry of the period of four years referred to therein, become final unless it is in the meantime rescinded or otherwise modified.

(2) The Prescribed Officer may, at any time prior to the issue of a duplicate Bond, if he finds sufficient reason, alter or cancel any order made by him under this regulation and may also direct that the interval before the issue of a duplicate Bond shall be extended by such period not exceeding four years as he may think fit.

(3) Indemnities:—

(a) (i) when executed under sub-regulation (1) (a) shall be for twice the amount of interest involved, that is to say twice the amount of all back interest accrued due on the Bond plus twice the amount of all interest to accrue due thereon during the period which will have to elapse before the issue of a duplicate Bond can be made, and

(ii) in all other cases shall be for twice the face value of the Bond plus twice the amount of interest, calculated in accordance with clause (i).

(b) the Prescribed Officer may direct that such indemnity shall be executed by the applicant alone or by the applicant and one or two sureties approved by him as he may think fit.

11. Procedure when a Bond in form of a Stock Certificate is lost, etc.

(1) Every application for the issue of a duplicate Stock Certificate in place of Stock Certificate which is alleged to have been Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced either wholly or in part shall be addressed to the Office of Issue and shall be accompanied by—

(a) the Post Office registration receipt of the letter containing the Stock Certificate, if the same was lost in transmission by registered post ;

(b) a copy of the police report, if the Loss or Theft was reported to the police ;

(c) affidavit sworn before a Magistrate testifying that the applicant is the legal holder of the Stock Certificate and that the Stock Certificate is neither in his possession nor has it been transferred, pledged or otherwise dealt with by him ; and

(d) any portions or fragments which may remain of the Lost, Stolen, Destroyed, Mutilated or Defaced Stock Certificate.

(2) The circumstances attending the loss shall be stated in the application.

(3) The Prescribed Officer shall, if he is satisfied of the Loss, Theft, Destruction, Mutilation or Defacement of the Stock Certificate, direct the issue of a duplicate Stock Certificate in lieu of the original Certificate.

12. Publication of list

(1) The list referred to in regulation 10 shall be published half-yearly in the Gazette of India in the months of January and July or as soon afterwards as may be convenient.

(2) All Bonds in respect of which an order has been passed under regulation 10 shall be included in the first list published next after the passing of such order and thereafter such Bonds shall continue to be included in every succeeding list until the expiration of four years from the date of first publication.

(3) The list shall contain the following particulars regarding each Bond included therein, namely, the name of the issue, the number of the Bond, its value, the name of the person to whom it was issued, the date from which it bears interest, the name of the applicant for a duplicate, the number and the date of the order passed by the Prescribed Officer for payment of interest or issue of a duplicate, and the date of publication of the list in which the Bond was first included.

13. Determination of a mutilated Bond as a Bond requiring issue of duplicate

It shall be at the option of the Prescribed Officer to treat a Bond which has been Mutilated or Defaced as a Bond requiring issue of a duplicate under regulation 10 or a mere renewal under regulation 16.

14. When a Bond in the form of a promissory note may be required to be renewed

- (1) A holder of a Bond in the form of a promissory note may be required by the Office of Issue to receipt the same for renewal in any of the following cases, namely—
 - (a) if only sufficient room remains on the back of the Bond for one further endorsement or if any word is written upon the Bond across the existing endorsement or endorsements ;
 - (b) if the Bond is torn or in any way damaged or crowded with writing or unfit, in the opinion of the Office of Issue;
 - (c) if any endorsement is not clear and distinct or does not indicate the payee or payees, as the case may be, by name or is made otherwise than in one of the endorsement cages on the back of the Bond;
 - (d) if the interest on the Bond has remained undrawn for ten years or more;
 - (e) if the interest cages on the reverse of the Bond have been completely filled or if the vacant printed cages on the reverse of the Bond do not correspond with the half-years for which interest has become due on the date when the Bond is presented for drawal of interest;
 - (f) if the Bond having been enfaced three times for payment of interest is presented for re-enfacement; and
 - (g) if in the opinion of the Office of Issue, the title of the person presenting the Bond for payment of interest is irregular or not fully proved.
- (2) When requisition for renewal of a Bond has been made under sub-regulation (1) payment of any further interest thereon shall be refused until it is receipted for renewal and actually renewed.

15. Person whose title to a Bond of a deceased sole holder may be recognised

- (1) The executors or administrators of a deceased sole holder of a Bond (whether a Hindu, Mohammedan, Parsi or otherwise) or the holder of a succession certificate issued under Part X of the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) in respect of the Bond shall be the only persons who may be recognised by the Office of Issue (subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer) as having any title to the Bond.
- (2) Notwithstanding anything contained in Section 45 of the Indian Contract Act, 1872 (9 of 1872), in the case of a bond issued, sold or held payable to two or more holders, the survivor or survivors and on the death of the last survivor, his executors, administrators, or any person who is the holder of a succession certificate in respect of such Bond shall be the only person who may be recognised by the Office of Issue (subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer) as having any title to the Bond.
- (3) The Office of Issue shall not be bound to recognise such executors or administrators unless they shall have obtained probate or letters of administration, as the case may be, from a competent court or office in India, having effect as the place of situation of the Office of Issue, Provided that in any case where the Prescribed Officer in his absolute discretion thinks fit, it shall be lawful for him to dispense with the production of probate or letters of administration or other legal representation upon such terms as to indemnity or otherwise, as he may think fit.

16. Receipt for renewal, etc.

- (1) Subject to any general or special instructions of the Prescribed Officer, the Office of Issue may, by its order, on the application of the holder—
 - (a) on his delivering the Bond or Bonds in the form of promissory note or notes and on his satisfying the Office of Issue regarding the justice of his claim, renew, sub-divide or consolidate the note or notes provided the note or notes has or have been receipted in Form I, II or III, as the case may be; or
 - (b) convert the note or notes into a Stock Certificate or Stock Certificates provided the note or notes has or have been endorsed as follows—
“Pay to the Industrial Development Bank of India”; or
 - (c) renew, sub-divide or consolidate a Stock Certificate or Stock Certificates provided the Stock Certificate or Stock Certificates has or have been receipted in Form VI, VII or VIII, as the case may be; or
 - (d) convert the Stock Certificate or Stock Certificates into promissory note or notes provided the Stock Certificate or Stock Certificates has or Stock Certificate has or have been receipted in Form IX, or

(e) convert the Bonds of one series into those of another provided—

(i) inter series conversion is permissible; and

(ii) the conditions governing such conversion are complied with.

(2) The Office of Issue may, under the orders of Prescribed Officer, require the applicant for renewal, sub-division or consolidation of a Bond under the sub-regulation (1) to execute an indemnity in Form IV with one or more sureties approved by him.

17. Renewal of Bond in case of dispute as to title

Where there is a dispute as to the title to a Bond in respect of which an application for renewal has been made, the Prescribed Officer may :—

(a) where any party to the dispute has obtained a final decision from a court of competent jurisdiction declaring him to be entitled to such Bond, issue a renewed Bond in favour of such party, or

(b) refuse to renew the Bond until such a decision has been obtained .

Explanation :

For the purposes of this regulation, the expression 'final decision' means a decision which is not appealable or a decision which is appealable but against which no appeal has been filed within the period of limitation allowed by law.

18. Liability in respect of Bond renewed, etc.

When a duplicate Bond has been issued under regulation 10 or a renewed Bond has been issued or a new Bond has been issued upon sub-division or consolidation under regulation 16, in favour of a person, the Bond so issued shall be deemed to constitute a new contract between the Development Bank and such person and all persons deriving the title thereafter through him.

19. Discharge

The Development Bank shall be discharged from all liability in respect of the Bond or Bonds paid on maturity or in place of which a duplicate, renewed, sub-divided or consolidated Bond or Bonds has or have been issued—

(a) in the case of payment, after the lapse of four years from the date on which payment was due;

(b) in the case of a duplicate Bond after the lapse of four years from the date of the publication under regulation 12 of the list in which the Bond is first mentioned, or from the date of the payment of interest on the original Bond, referred to in regulation 10 whichever date is later;

(c) in the case of a renewed Bond or of a new Bond issued upon sub-division or consolidation after the lapse of four years from the date of issue thereof.

20. Discharge in respect of interest

Save as otherwise expressly provided in the terms of the bond, no person shall be entitled to claim interest on any such Bond in respect of any period which has elapsed after the earliest date on which demand could have made for the payment of the amount due on such Bond.

21. Discharge of a Bond

(a) When a Bond held in the form of promissory note or Stock Certificate becomes due for payment of principal, it shall be presented at the office of the Development Bank at which interest thereon is payable or at the Office of Issue duly signed by the holder on its reverse;

(b) When a Bond in the form of an entry in the account becomes due for payment of principal, a duly signed receipt in Form XIV shall be furnished by the holder to the Office of Issue.

22. Exercise of Powers on behalf of the Development Bank

The powers exercisable by the Development Bank under regulations 4(2), 5(2), 5(7) and 7(1) may be exercised on behalf of the Development Bank by the Chairman and/or Managing Director and in his/their absence an Executive Director of the Development Bank.

THE SCHEDULE

FORM I [See regulation 16(1)(a)]

Form of endorsement for renewal of a Bond in the form of a Promissory Note

Received in lieu hereof, a renewed Note Payable to with
(name of holder)

interest payable by the Industrial Development Bank of India,
(place)

Signature of the holder/duly authorised representative of
(name of holder)

FORM II [See regulation 16(1)(a)]

Form of endorsement for sub-division of a Bond in the form of a Promissory Note

Received in lieu hereof Notes for Rs.....

..... respectively, payable to
(name of holder)

with interest payable by the Industrial Development Bank of India,
(place)

Signature of the holder/duly authorised representative of
(name of holder)

Form III [See regulation 16(1)(a)]

Form of endorsement of consolidation of Bonds in the form of Promissory Note

Received in lieu hereof a new Note payable to for Rs.....
(name of holder)

by consolidation with Note or Notes No.(s)
(mentioning the number(s) and amount(s) of the other Note(s) desired to be consolidated
with it and specifying the issue) with interest payable by the Industrial Development Bank
of India,
(place)

Signature of the holder/duly authorised representative of
(name of holder)

FORM IV [See regulation 16(2)]

Know all men by these presents that we
(Name of Principal)

Son of Resident of
and Son of
(Surety No.1)

Resident of and
(Surety No.2)

Son of Resident of

hereby bind ourselves and each of us, our and each of our heirs, executors, administrators and representatives and all of them jointly and severally to the Industrial development Bank of India as established under the Industrial Development Bank of India Act, 1964 (hereinafter called "the said Development Bank") for payment of the sum of Rs..... to the said Development Bank, its certain attorneys, successors and assigns.

AND I/each of us the said hereby
(name of Principal) and (name of Surety/Sureties)

covenant with the said Development Bank that if any suit shall be brought touching the subject matter of this obligation or the condition hereunder written in any court subordinate to the High Court of Judicature at Bombay, the same may, at the instance of the said Development Bank whoever may be a party to such suit be removed unto, tried and determined by the said High Court in its extraordinary original civil jurisdiction at Bombay.

WHEREAS THE said has applied to the said
(name of Principal)
Development Bank, for the renewal/consolidation/sub-division of Bond(s) issued by the said Development Bank mentioned in the schedule hereto.

AND WHEREAS the said Development Bank has consented and agreed to accept the said application on the said with two good and sufficient
(name of Principal)
sureties entering into and executing the above written bond subject to the condition hereunder written:

Nature and description of the Bond	Number	Date of issue	Amount
------------------------------------	--------	---------------	--------

FORM V [See regulation 3(3)]

Form of Transfer

I/We, do hereby assign and transfer
 (name of holder(s))
 my/our interest or share in the inscribed Stock of the percent Industrial
 Development Bank of India Bonds, amounting to Rs. being
 (year)
 the amount/a portion of the Stock for Rs. as specified on the face of
 this instrument together with the accrued interest thereon unto
 (name of transferee(s))
 his/her/their executors, administrators or assigns, and I/We
 (name of holder(s))
 do freely accept the above Stock transferred to the extent it has been transferred to me/us.

I/We, hereby request that on
 (name of transferee(s))
 my/our being registered as the holder/s of the Stock hereby transferred to me/us the
 aforesaid Stock Certificate to the extent it has been transferred to me/us may be renewed
 in my/our name(s)/converted in my/our name(s)

*I/We hereby request that on the
 (name of holder(s))
 above transferee(s) being registered as the holder(s) of the Stock hereby transferred to
 him/them the aforesaid Stock Certificate to the extent it has not been transferred to
 him/them may be renewed in my/our name(s).

As witness our hand the day of
 one thousand nine hundred and signed by the above
 named transferor in the presence of ** (Transferor)

Address

(Transferee)

Address

Signed by the above named transferee in the presence of **

This paragraph is to be used only when a portion of a
 certificate is transferred

**** Signature, occupation and address of witness**

FORM VI [See regulation 16(1)(c)]

Form of endorsement for renewal of a Stock Certificate

Received in lieu hereof a renewed Stock Certificate of the per cent
Industrial Development Bank of India Bonds, for Rs. in the
.....

(year)

name of with interest payable by the Industrial
Development Bank of India,
(place)

Signature of the registered holder/duly
authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM VII [See regulation 16(1)(c)]

Form of endorsement for sub-division of a Stock Certificate

Received in lieu of this Stock Certificates No....., Stock Certificates for
Rs..... respectively of the per cent Industrial development Bank of India
Bonds, with interest payable by the Industrial Development Bank of
(year)
India,.....
(place)

Signature of the registered holder/duly
authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM VIII [See regulation 16(1)(c)]

Form of endorsement for consolidation of Stock Certificates

Received in lieu of Stock Certificate No....., Stock Certificates for
Rs..... respectively of the per cent Industrial development Bank of India
Bonds, a Stock Certificate for Rs.....
(year)
of the per cent Industrial Development Bank of India Bonds
..... with interest payable by the Industrial Development Bank of
(year)
India,.....
(place)

Signature of the registered holder/duly
authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM IX [See regulation 16(1)(d)]

Form of endorsement for conversion of Stock Certificates into Promissory Notes

Received in lieu of this Stock Certificate Promissory Notes
of Rs..... each together with a new Stock Certificate for the
balance amounting to Rs..... with interest payable by the Industrial
Development Bank of India,
(Place)

Signature of the registered holder/duly
authorised representative

.....
(name of registered holder)

FORM X [See regulation 5(2)(b)(iii)]

Form of receipt for renewal of a Bond issued in the form of Stock Certificate

Received in lieu hereof a renewal Stock Certificate of the per cent Industrial

Development Bank of India Bonds, for Rs.....
(year)

in favour of with
interest payable by the Industrial Development Bank of India,
(place)

.....
(name of registered holder)

FORM XI [See regulation 3(3A)(c)]

Requisition for conversion of Bond in the form of Promissory Note into an entry in the account with the Development bank

Date..... 19.....

To:

Manager,
Bonds Section,
Industrial Development Bank of India,
Bombay.

Dear Sir,

**Re: % Industrial Development Bank
of India Bonds (..... Series)**

We hereby declare that the Industrial Development Bank of India Bonds issued in the form of Promissory Note(s) of the aggregate face value of Rs.....listed on the reverse is/are our property and request that we may please be allowed to hold the same in the form of an entry in the account to be maintained by the Development Bank in our name for which purpose we are surrendering herewith the relevant bond scrips duly endorsed in favour of the Development Bank. The name, designation and specimen signature(s) of the persons(s), who has/have been authorised to operate the account are as per details given on the reverse.

In this connection, we are enclosing hereto deed of indemnity in your favour, duly stamped and executed on our behalf as per your draft.

We request you to kindly send to us in due course certificate of holding of bonds in form of an account with the Development Bank and periodic statement of our holding at the address given above.

In the meanwhile please acknowledge receipt.

Yours faithfully,

Signature(s) of the registered
holder(s)/his duly
authorised representative.....

Name(s) of registered
holder(s)

LIST OF BOND SCRIPS ENCLOSED HERETO

Promissory Note(s) in demonination(s) as stated below:

1. Bond Scrip No. _____ dated _____ for
(Rs. _____ (_____ Series).
2. Bond Scrip No. _____ dated _____ for
(Rs. _____ (_____ Series).
3. Bond Scrip No. _____ dated _____ for
(Rs. _____ (_____ Series).

Aggregate face value of the Bond Scrips Rs. _____
Specimen Signature(s) _____ Singly/Jointly/Either or Survivor

Name 1. _____ Designation _____

2. _____ Designation _____

Address: ' _____

Telephone : _____ Telex : _____

Enclosed (i) Bond Scrips for aggregate value of Rs. _____

(ii) Deed of Indemnity.

FORM XII [See regulation 3(3A) (e)]

Requisition for issue of Bond scrips in lieu of the Bonds held in the form of entry
in the account with the Development Bank

To:

Manager,
Bonds Section,
Industrial Development Bank of India,
Bombay.

Dear Sir,

Re: _____ % Industrial Development Bank
of India Bond _____ (____ Series)

We are forwarding herewith the certificate of holding issued by the Development Bank in respect of the Bonds held by us in the form of an entry in the account maintained by the Development Bank.

We request that our Bond holdings may please be converted and transferred in the form of promissory note(s), as per details given on the reverse.

We request that Bond Scrips in this regard may please be forwarded to us by registered post at our address given above, along with the fresh certificate of holding in respect of the balance amount of the Bonds that are continued to be held in the form of an entry in the account maintained by the Development Bank.

In the meanwhile please acknowledge receipt.

Yours faithfully,

Signature(s) of the registered
holder(s)/his duly
authorised representative.....

Name(s) of registered
holder(s)

Details of promissory notes required

1. Certificate of Holding No..... dated
Rs.....(..... Series).
2. Certificate of Holding No..... dated
Rs.....(..... Series).
3. Certificate of Holding No..... dated
Rs.....(..... Series).

35621/97-6

in the presence of _____

NOTE: To be stamped in accordance with Article 62(c) of the Indian Stamp act, 1899
(as amended by the local Stamp Act of the State in which it is executed).

FORM XIV [See regulation 21(b)]

Form of discharge for the Bonds held in the form of entry in the account with the
Development Bank

To:
Manager,
Bonds Section,
Industrial Development Bank of India,
Bombay.

Dear Sir,

Re: _____ % Industrial Development Bank
of India Bonds(s) _____ (_____ Series)

Received the principal amount with accrued interest on the date of maturity on
Captioned Bond(s) of the nominal face value of Rs. _____ (Rupees _____
_____ only) held in form of an entry in the books of the Industrial
Development Bank of India to the Credit of _____ (Bond holder). It
is certified that the nominal amount of the Bond(s) and the accrued interest as on the date
of maturity agree with my/our books.

Yours faithfully,

Signature(s) of the registered
holder(s)/his duly
authorised representative.....

Date :

Name(s) of registered
holder(s)

Place:

B.D. USHIR, Chief General Manager (Legal)

Certified that Government of India have given approval to the amendments to the Industrial
Development Bank of India (Issue and Management of Bonds) Regulations, 1972 vide their
letter F. No. 10(23)/I.F.I./93 dated 22-5-1996